CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14'6

अध्यात्म पूजा संग्रह

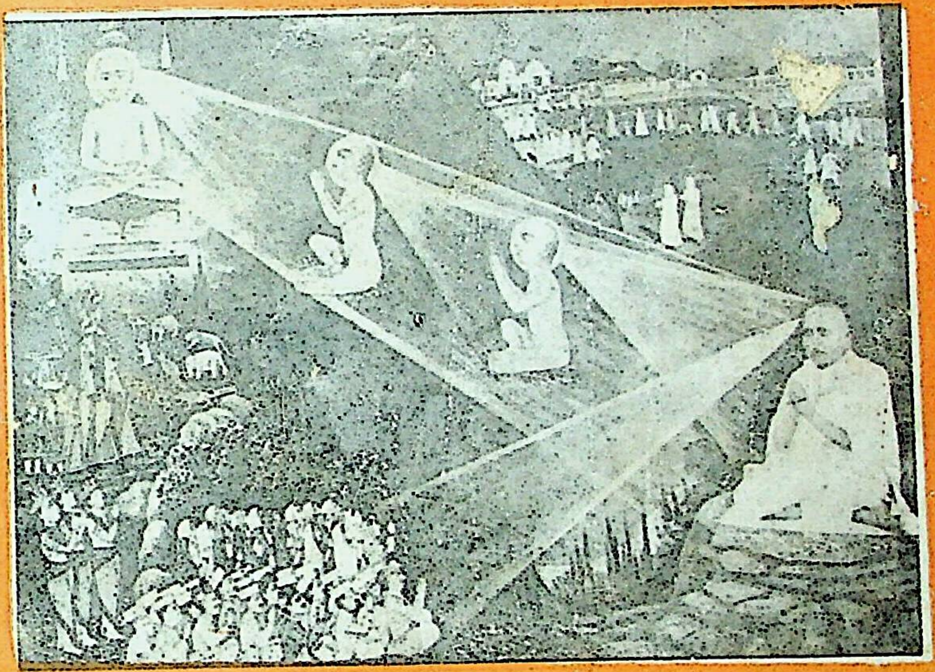

श्री कुन्द-कहान परमार्थ प्रकाशन

पुष्प—२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्त शास्त्री
सादर भेंट

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5343

ॐ

श्री परमात्मने नमः

श्री कुन्द-कहान परमार्थ प्रकाशन
पुष्प–२

अध्यात्म पूजा संग्रह

(नित्य नियम, पर्व आदि की अध्यात्म रस भरी २४ नवीन पूजायें)

समर्पक- ज्ञानचन्द्र जैन

प्रकाशक

नेमचन्द्र जैन परिवार

८, वीर नगर जैन कालोनी,

दिल्ली-११०००७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राप्ति स्थान :–

१. श्री दि० जैन मुमुक्षु मंडल,
२६, डिप्टीगंज, सदर बाजार,
दिल्ली–११०००६

२. श्री शुभकरण सेठिया,
८६/४ श्री पार्श्वनाथ रोड,
पानीपत (हरियाणा)

३. श्री टोडरमल स्मारक भवन
ए-४, बापूनगर,
जयपुर-३०२०१५

प्रथम आवृत्ति २२००

वैशाख शुक्ल २ वीर निर्वाण सम्वत् २५०८
(पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी का ९३वां जन्म जयंती दिवस)

मूल्य ५ रुपये

मुद्रक
जगदीश प्रिंटर्स,
बी ९४, ओखला इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज-२
नई दिल्ली-११००२०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

जिनधर्म दिवाकर परमोपकारी अध्यात्म सत्पुरुष

श्री कानजी स्वामी

के

कर कमलों में सविनय समर्पण

ज्ञान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

श्री जिनेन्द्र पूजा श्रावक के दैनिक षट् आवश्यक कर्तव्यों में सब प्रथम कर्तव्य है। द्रव्य पूजा और भाव पूजा के भेद से पूजा दो प्रकार की है। आत्मभानपूर्वक पूज्य देव-शास्त्र-गुरु के गुणों का चिन्तन सो भाव पूजा है और उनके गुणों में अनुराग सहित मन-वचन-काय का यथायोग्य प्रवर्तन सो द्रव्य पूजा है। द्रव्य पूजा गुण-प्राप्ति और दोष-नाश की भावना पूर्वक प्रासुक जल-फलादि अष्ट द्रव्यों से की जाती है। इस प्रकार भाव पूजा सहित द्रव्य पूजा श्रावक का प्रथम दैनिक कर्तव्य है। इन पूजाओं की रचना अन्तर्बाह्य क्रिया के सुमेल की दृष्टि से हुई है।

प्रत्येक पूजा के तीन अंग हैं: स्थापना, अष्टक और जयमाल। इनमें से अपने भाव के अनुसार प्रत्येक अंग का परस्पर यथायोग्य रीति से उपयोग करके इनसे अन्य पूजायें भी की जा सकती हैं। उदाहरण के तौर पर 'श्री जिन पूजा' की स्थापना और अष्टकों में 'आदिनाथ' भगवान के स्थान पर किन्हीं भी भगवान का नाम बदल कर चौबीसों भगवान की अलग अलग पूजा की जा सकती हैं। चौबीसों भगवान की पंच कल्याणक तिथियों के लिए पुस्तक के अन्त में पंच कल्याणक चार्ट दिया गया है। देव-शास्त्र-गुरु पूजा-२ के अष्टक 'देव-शास्त्र-गुरु' के स्थान पर अन्य भगवान का नाम बदलकर प्रयुक्त किये जा सकते हैं। इसी प्रकार क्षमावणी पूजा के अष्टकों का भी उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। भाव सहित पूजा के फल से मेंढक भी जब देव होकर साक्षात् जिनेन्द्र देव की कल्याणकारी वाणी सुनकर आत्महित साध सकता है तो फिर मुमुक्षु श्रावक को भाव सहित श्री जिनेन्द्र पूजा से शीघ्र ही सर्वसिद्धि की प्राप्ति में क्या संदेह हो सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय सूची

विषय		पृष्ठ
१.	विनयपाठ	१
२.	नित्यनियम पूजा	४
३.	स्वस्ति मंगल	७
४.	श्री देवशास्त्र-गुरु पूजा-१	१०
५.	श्री देव-शास्त्र गुरु पूजा-२	१६
६.	श्री षोड़श कारण पूजा	२३
७.	तीस चौबीसी पूजा	२८
८.	श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा	३३
९.	श्री चौबीस जिन पूजा	३८
१०.	श्री जिन पूजा	४४
११.	श्री सिद्ध पूजा–१	५१
१२.	श्री सिद्ध पूजा–२	५६
१३.	श्री पंचपरमेष्ठी पूजा	६१
१४,	भगवती जिनवाणी पूजा	६६
१५.	श्री बाहुबली जिन पूजा	७१
१६.	श्री अकंपनादि सात शतक मुनि पूजा	७६
१७.	श्री विष्णुकुमार मुनि पूजा	८१
१८.	श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालय पूजा	८६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	विषय	पृष्ठ
१९.	श्री पंचमेरु जिनचैत्यालय पूजा	९२
२०.	श्री नंदीश्वर जिनचैत्यालय पूजा	९७
२१.	श्री दशलक्षण धर्म पूजा	१०२
२२.	श्री रत्नत्रय पूजा	१०६
२३.	श्री सम्यक्‌दर्शन पूजा	१११
२४.	श्री सम्यक्‌ज्ञान पूजा	११५
२५.	श्री सम्यक्‌चारित्र पूजा	११९
२६.	श्री क्षमावणी पूजा	१२३
२७.	श्री पंच बालयति पूजा	१२९
२८.	समुच्चय अर्घ	१३६
२९.	शांति पाठ	१३७
३०.	मुमुक्षु की भावना	१३८
३१.	क्षमापन	१३८
३२.	पद	१३९
३३.	समाधि भावना	१४२
३४.	विज्ञप्ति	१४३
३५.	पंच कल्याणक चार्ट	

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिनेन्द्र स्तुति

तुम्हारी महिमा कही न जाय। नाथ की महिमा कही न जाय ॥
महिमा कही न जाय, तुम्हारी महिमा कही न जाय ॥ टेक ॥

जिन के दर्शन से निज दर्शन, करत चित्त हर्षाय।
जो जिन हैं सो ही मैं चेतन, यह अनुभव उर आय ॥ तुम्हारी० ॥ १ ॥

स्वसंवेदन ज्ञान कार्य हैं, नाथ रहे दर्शाय।
ज्ञायकघन की अनुपम शान्ति, भोग यही मन भाय ॥ तुम्हारी० ॥ २ ॥

पुण्य-पाप सबही विभाव हैं, अनुभव आत्म स्वभाव।
बलिहारी ध्रुव ज्ञायकघन की, जिन ध्रुव कीने[1] निज भाव[2] ॥ तुम्हारी० ॥३॥

चेतन मम सर्वस्व है, नाथ दिखायो मोय[3]।
आत्म तृप्ति, संतुष्टि, रति पर, बलि-बलि जाऊं तोय[4] ॥ तुम्हारी० ॥ ४ ॥

---

१. किये २. पर्याय ३. मुझे ४. तुम्हारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाचरण

निश्चय देव निजात्मा, परमेष्ठी व्यवहार।
द्रव्य-भाव पूजा सहित, करूं मंगलाचार॥ १॥

जान जान परमात्म के द्रव्य-गुण-पर्याय।
भव्य लखैं निज आत्मा, मोह विलय हो जाय॥ २॥

जिनवर धर्म के मूल हैं, अनुपम सुख के हेतु।
दिव्यध्वनि से भव्य जन, बांधैं भवदधि-सेतु॥ ३॥

जिन प्रतिमा जिन सारखी, यामें संशय नांहि।
वचन बिना ही मुमुक्षु को, चिन्मूरत दर्शांहि॥ ४॥

पूजा श्री जिनदेव की, करै महान कल्याण।
शीघ्र भवार्णव पार हो, मिलै परम निर्वाण॥ ५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri.

5343

ॐ

श्री वीतरागाय नमः

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्मजु आठ ॥ १ ॥

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज ॥ २ ॥

तिहुं जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार ॥ ३ ॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निज गुण राश ॥ ४ ॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुं जग भूप ॥ ५ ॥

मैं वंदौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म बंध के छेदने, और न कछू उपाव ॥ ६ ॥

भवि जिनको भव-कूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम-गुण-भंडार ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज-मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल ॥ ८ ॥

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥ ९ ॥

चक्री-खगधर-इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥ १० ॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरो हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥ ११ ॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥ १२ ॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभू, जय जय जय जिनदेव ॥ १३ ॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥ १४ ॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुषभयो, पायो जिनवर थान ॥ १५ ॥

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥ १६ ॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेओ लगाओ पार ॥ १७ ॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारके, कीजे आप समान ॥ १८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमरो नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार ॥ १६ ॥

जो मैं कहऊँ औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार ॥ २० ॥

वंदों पांचों परम गुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरण मंगल करण, पूरन परम प्रकाश ॥ २१ ॥

चौबीसों जिन पद नमों, नमों शारदा माय।
शिव मग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय ॥ २२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्य नियम पूजा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमोसिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,।

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण)

चत्तारि मंगलं - अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा - अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारिसरणं पव्वज्जामि - अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षेपण)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत् पंच नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपराजित मन्त्रोऽयं, सर्वं विघ्न विनाशनः ।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः ।। ३ ।।

एसो पंच-णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।। ४ ।।

अर्हंमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम् ।। ५ ।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी-निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ।। ६ ।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ।। ७ ।।

(पुष्पांजलि क्षेपण)

उदक-चन्दन-तण्डुल-पुष्पकैः, श्चरु-सुदीप-सु धूप फलार्घकैः ।
धवल-मंगलगान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ महं यजे ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायकमनन्त - चतुष्टयार्हंम् ।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि ।। ८ ।।

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय ।। ९ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्त्युच्छलद्विमल बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ॥ १० ॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तु कामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥ ११ ॥

अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तू न्यनून मखिलान्यय मेकएव।
अस्मिन्ज्वलद्विमल केवल बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्र महमेकमना जुहोमि ॥ १२ ॥

(पुष्पांजलि क्षेपण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वस्ति मंगल

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ॥

श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः ।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ॥

श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः ।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ॥

श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः ॥

श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ॥

श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः ।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्धमानः ॥

(पुष्पांजलि क्षेपण)

नित्या प्रकम्पाद्‌भुत-केवलौघाः,
स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोष्ठस्थ-धान्योपममेक बीजं,
संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा-
दास्वादन-घ्राण विलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञान बलाद्वहन्तः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः,
प्रत्येक बुद्धा दश सर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्त विज्ञाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥

जङ्घावलि-श्रेणि फलाम्बु-तन्तु,
प्रसून-बीजाङ्कुर चारणाह्वाः।
नभोंऽगण-स्वैर विहारिणश्च,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥

अणिम्न दक्षाः कुशला महिम्नि,
लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥

सकाम रूपित्व-वशित्व मैश्यं,
प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथाऽ प्रतीघात गुण प्रधानाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ७ ॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं,
घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मा परं घोर गुणाश्चरन्तः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ८ ॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी -
र्विषं विषा दृष्टि विषं विषाश्च,
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ ९ ॥

क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तो,
मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीण संवास - महानसाश्च,
स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥ १० ॥

(प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण)

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा–१

दिव्य ज्ञानसे देव हैं, अरिहन्त सिद्ध महान !
वन्दूं मैं परमात्मा, करहु विमल कल्याण ॥ १ ॥

जो जाने परमात्मके द्रव्य-गुण-पर्याय ।
सो जाने निज आतमा, मोह विलय हो जाय ॥ २ ॥

दिव्यध्वनि जिनदेवकी, करती ज्ञान प्रकाश ।
स्वपर भेदविज्ञान कर, करै मोक्ष में वास ॥ ३ ॥

गुरुवर श्री आचार्य हैं, उपाध्याय, मुनिराज ।
साधक निज शुद्धात्मके, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥

देवशास्त्र-गुरु रतनत्रय, पुन पुन करूं प्रणाम ।
भक्ति भाव पूजा करूं, देहु अचल शिव धाम ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानंद निर्मल नीर, चिद्‌रुचि झारी भरूं ।
मिटे मोह अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं ॥
श्री देव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करैं ।
मैं उतरूं भवदधिपार, पूजत पाप हरैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

ज्ञानानंद चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै ।
जिन चरनन देऊं चढ़ाय, दुःख अज्ञान हरै ॥
श्री देव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करैं ।
मैं उतरूं भवदधि पार, पूजत पाप हरैं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्वं अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं ।

अक्षत ज्ञानानंद सार, अक्षय पदकारी ।
मिटै सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी ॥
श्री देव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करैं ।
मैं उतरूं भवदधि पार, पूजत पाप हरैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानंद सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महा गुणवान, अनुपम सुखकारी ॥
श्रीदेव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करें।
मैं उतरूं भवदधि पार, पूजत पाप हरें ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं ।

नेवज ज्ञानानंद रूप, प्रभु ढिग भेट धरूं ।
मिटै क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं ॥
श्रीदेव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करैं।
मैं उतरूं भवदधि पार, पूजत पाप हरैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं ।

दीपक ज्ञानानंद सार, धारौं प्रभु आगे।
मिटै मोह-अज्ञान-अन्धकार, ज्ञान रवि जागे ॥
श्रीदेव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करैं।
मैं उतरूं भवदधि पार, पूजत पाप हरैं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानन्द दीपं ।

चिद् ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारूं ।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारूं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीदेव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करें।
मैं उतरूँ भवदधि पार, पूजत पाप हरें॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को अष्टकर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानन्द धूपं।

ज्ञानानंद फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में।
मैं पाऊँ सिद्ध पद इष्ट, प्रभु के चरणन में॥
श्रीदेव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करें।
मैं उतरूं भवदधि पार, पूजत पाप हरें॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफलं लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घ करूँ।
करूं आतम विलास सुठाठ, भवतरि मोक्ष वरूँ॥
श्रीदेव-शास्त्र-गुरु सार, ज्ञान प्रकाश करें।
मैं उतरूँ भवदधि पार, पूजत पाप हरें॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल.

जय जय जय श्री अरिहंत देव, शत इन्द्र प्रभू की करैं सुसेव।
कर चार घातिया कर्म नाश, पायो अनुपम आतम प्रकाश ॥ १ ॥

तहां ज्ञान अनन्त अद्भुत विकास, युगपत् जानै सब जग विलास।
दर्शन अनन्त अद्भुत अनूप, युगपत् देखै सब जग स्वरूप ॥२॥

और सुख अनन्त इन्द्रियातीत, अतिशय स्वात्मोत्पन्न अति पुनीत।
वीरज अनन्त स्वात्मोत्थजान, रचै क्षण क्षण शुद्ध परिणति महान ॥३॥

इत्यादि अनन्त गुण परम शुद्ध, प्रगटे जिन सूर्य स्वयं बुद्ध।
मुनिगणधरादि सेवत महान, दिव्य ध्वनि करती ज्ञानदान ॥ ४ ॥

जय जय जय श्री सिद्धराज, भवसागर में अद्भुत जिहाज।
लख सिद्ध सम निज आतम मुमुक्षु, हुए-होंय-होयगें विश्व चक्षु ॥ ५ ॥

क्षायिक समकित और दर्शज्ञान, सुख अव्याबाध अनन्त जान।
वीरज अनन्त स्वात्मोत्थ जान, रचै क्षण क्षण शुद्ध परिणति महान ॥६॥

अवगाहन सूक्ष्मत्व गुण महान, अगुरुलघु से सब सिद्ध समान।
यों आठ कर्मंहृत गुणहों आठ, करैं सिद्ध प्रभु आतम सुठाठ ॥ ७ ॥

इत्यादि सर्वगुण पूर्ण शुद्ध, प्रगटे सिद्धों को परम बुद्ध।
साधक के हो आदर्श नाथ, स्वात्मोपलब्धि में सिद्ध साथ ॥ ८ ॥

तीर्थेश जिन्हें करके प्रणाम, फिर साधैं निजात्मा गुण निधान।
मुनिगणधरादि सेवें अपार, प्रभू सिद्धन को हम नमस्कार ॥ ९ ॥

षट्द्रव्य और पंचास्तिकाय, सप्त तत्व पदार्थ नव बताय।
गणधर गूंथें द्वादशांग रूप, वहां शुद्ध चिदातम सारभूप ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कारण शुद्ध परमात्मा महान, निश्चय से सब जीव सिद्ध समान।
पर्याय भेद सो सब व्यवहार, व्यवहार पार सो समयसार ।। ११ ।।

व्यवहार भेद सब कर्म सृष्टि, एक ज्ञानमूर्ति लखै द्रव्य दृष्टि।
निश्चय आश्रित यों मुक्त होय, जिन शास्त्र प्रगट दर्शावैं सोय।। १२।।

व्यवहार ज्ञेय नहीं उपादेय, चिन्मूरत ही बस एक ध्येय।
यों दर्शन-ज्ञान-चारित्र मांहि, वर्तें शुद्धातम जिन कहांहि ।। १३ ।।

गणधर आदि आचार्य देव, जिन अनुसारी करैं स्वात्म सेव।
शुद्धात्म रूप में रहैं लीन, करैं क्षण क्षण में व्यवहार क्षीण ।। १४ ।।

कभी शुभोपयोग तब धर्म रूप, जिन शासन बर्तावैं अनूप।
धरैं भवतन भोग विराग अथाह, वर्तें निज पर कल्याण चाह ।। १५ ।।

हैं उपाध्याय महा ज्ञान रूप, लखैं शास्त्र ज्ञान से निज स्वरूप।
पढ़ैं स्वयं पढ़ावें अन्य जीव, नमूं ज्ञान मूर्ति मैं सो सदीव ।। १६ ।।

साधु साधें शुद्धातम योग, सम सुख दुख एक चिदात्म भोग।
अन्तर्बाह्य तप धरैं सार, उन साधक को हम नमस्कार ।। १७ ।।

जय जय जिनराजा, सिद्ध समाजा, जय जय माता जिनवाणी।
जय जय श्री गुरुवर, करुणा सागर, देहु सिद्धपद सुखदानी ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

तीन जगत में सार, देव-शास्त्र-गुरु रतनत्रय,
नमूं त्रियोग संभार, आप प्रसाद शिवपद लहूं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा—२

दिव्य ज्ञानसे देव हैं, अरिहन्त सिद्ध महान !
वन्दूं मैं परमात्मा, करहु विमल कल्याण ॥ १ ॥

जो जाने परमात्मके द्रव्य-गुण-पर्याय।
सो जाने निज आतमा, मोह विलय हो जाय ॥ २ ॥

दिव्यध्वनि जिनदेवकी, करती ज्ञान प्रकाश।
स्वपर भेदविज्ञान कर, करै मोक्ष में वास ॥ ३ ॥

गुरुवर श्री आचार्य हैं, उपाध्याय, मुनिराज।
साधक निज शुद्धातमके, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥

देवशास्त्र-गुरु रतनत्रय, पुन पुन करूं प्रणाम।
भक्ति भाव पूजा करूं, देहु अचल शिव धाम ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजो, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये मोह अज्ञान महा मल है, चिद् परिणति इससे चिरमैली।
प्रभु शुद्ध चिदानंद लीन आप, पाकर अनन्त निजगुण थैली ।।
मैं भेदविज्ञान विना प्रभुवर ! चिरकाल रुला हूं भववन में ।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम मैल हरो प्रभुक्षणभर में ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

प्रभु वचन हरें मिथ्या विभाव, भव्यों को प्यारे लगते हैं ।
जिन वचन से लख निज परमातम, वे मोक्ष से क्रीड़ा करते हैं ।।
मैं भेद विज्ञान विना प्रभुवर ! चिरकाल रुला हूँ भववन में ।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम ताप हरो प्रभु क्षण भर में ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं ।

अक्षत शुद्धातम आप प्रभो, निज आश्रय से परिणति अक्षत ।
मैं आप समान ही ध्रुव चेतन, पर आश्रित मेरी परिणति क्षत ।।
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर ! चिरकाल रुला हूँ भववन में ।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम परिणति करो अक्षत क्षण में ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु शील शिरोमणि आप ही हो, ध्यानाग्नि से काम सब नष्ट किया।
रत्नत्रय से भज ध्रुव चेतन, परमात्म सुधारस पूर्ण पिया॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम काम हरो प्रभु क्षण भर में॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

प्रभु शुद्धातम संतृप्त आप, पर की न चाह रही कुछ भी।
पर चाह अतृप्त क्षुधाग्नि है, मेरी न मिटी ये प्रभु अब भी॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम क्षुधा हरो प्रभु क्षण भर में॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी, पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

ध्रुव चिदानन्द परिपूर्ण प्रगट, प्रभु तन में केवल सूर्य दिपै।
युगपत् सर्वज्ञ त्रिकाल त्रिजग, अज्ञान मोह तम सर्व भगै॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम तिमिर हरो प्रभु क्षण भर में॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्रुव चिदानन्द ध्यानाग्नि में, प्रभु कर्म आप सब भस्म किये।
निष्कर्म होय परमानन्दमय ज्ञानादि अनन्त गुण प्रगट किये॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब देव शास्त्र-गुरु शरण गही, मम कर्म हरो प्रभु क्षण भर में॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को अष्टकर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

प्रभु मोक्ष महा फल खान आप, अनुपम अनन्त सुख सदा धरो।
अभी मुझे कर्मफल विद्यमान, प्रभु मेरी रक्षा शीघ्र करो॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मम मोक्ष करो प्रभु क्षण भर में॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण आठ धार, प्रभु आप बसो निज आतम में।
सो ही मैं आठ गुण अर्घ लेय, अब आया प्रभु के चरणन में॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब देव-शास्त्र-गुरु शरण गही, मुझे पूर्ण करो प्रभु क्षण भर में॥९॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

मैं शुद्ध चिदानन्द ध्रुव वस्तु, पर्याय अनित्य सब होती है।
तज प्रीति अनित्य की भज ध्रुव चिद्, पर्याय भी शाश्वत होती है ॥१॥

मैं चिदानन्द ध्रुव महाशरण, पर्याय सभी अशरण होती।
तज अशरण शरण, चिदानन्द भज, पर्याय भी ध्रुव सशरण होती ॥२॥

मैं निःसंसार चिदानन्द हूँ, संसरण सभी दुखकंद महा।
संसरण त्याग चिद्धाम वसूं, करूं सिद्धधाम विश्राम सदा ॥ ३ ॥

मैं एक चिदानन्द शुद्ध रूप, पर्याय अनेक विध कर्मज है।
पर्याय एकत्व अनुभव तजकर, चिद् एकत्व अनुभव धर्मज है ॥ ४ ॥

कर्मज पर्याय अनेक रूप, मैं इनसे भिन्न चिदानन्द घन।
पर्याय लक्ष्य तज भज ध्रुव चिद्, पर्याय भी होती आनन्द घन ॥ ५ ॥

त्रिकर्म रूप तन महा अशुचि, मैं चिदानन्द निर्मल देही।
तज अशुचि प्रीति निर्मल चिद् भज, बनता साधक ध्रुव वैदेही ॥ ६ ॥

निज चिदानन्द को चूकै जब, सो परिणति आस्रव दुःखमयी।
भज चिदानन्द निरास्रव को, परिणति होती ध्रुव सौख्यमयी ॥ ७ ॥

मैं शुद्ध चिदानन्द ध्रुव वस्तु, यों भज भज संवर होता है।
आस्रव निरोध, पर्याय शोध, यों ध्रुव चिद् आश्रित होता है ॥ ८ ॥

मैं चिदानन्द परमात्म रूप यों चित का प्रतपन जब होता।
तब कर्म निर्जरा स्वयं प्रचुर, शुद्धात्म विभव प्रगटित होता ॥ ९ ॥

मैं असंख्य प्रदेशी चिदानन्द, यह शाश्वत लोक हमारा है।
त्रिकर्म लोक अति दुखदायी, चिद् लोक में शिव सुख प्यारा है ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं चिदानन्द स्वभाव सुलभ, जड़ प्रीति से दुर्लभ बना हुआ।
जड़ प्रीति हटा अन्तर्मुख हो, अहो चिदानन्द अति सुलभ हुआ ॥११॥

मैं चिदानन्द हूँ धर्ममूर्ति, मोह-क्षोभ रहित होता धर्म।
भज शुद्ध चिदानन्द ध्रुव वस्तु, परिणति होती ध्रुव शिव शर्म ॥१२॥

हे देव ! आपका दर्शन ये, निज आतम दर्श कराता है।
अतएव प्रभो तव चरणों में, मम मस्तक झुकता जाता है ॥ १३ ॥

प्रभु शुद्ध चिदानन्द ध्रुव ईश्वर, ज्ञानादि अनन्त गुणधारी हो।
चिद् प्रीति-ज्ञान और वृत्तिमय, सर्वज्ञ महा उपकारी हो ॥ १४ ॥

स्याद्वादमयी प्रभु की वाणी, सर्वांग तत्त्व दर्शाती है।
निश्चय अभेद आश्रित शिव पथ, व्यवहार का ज्ञान कराती है ॥ १५ ॥

गणधर आदि आचार्य देव, उपाध्याय, मुनि जिन अनुसारी।
साधें क्षण क्षण शुद्धोपयोग, तज शुभोपयोग हों अविकारी ॥ १६ ॥

कभी शुभोपयोग तब धर्म रूप, जिनशासन वर्तावें भारी।
धरें भव-तन-भोग विराग महा, वे भव्योंके अति उपकारी ॥ १७ ॥

करें अन्तर्बाह्य तप उत्तम, तरु तल या शैल नदी तट पर।
सम सुख-दुख एक चिदानन्द रस, भोगें स्व को ग्रह तज कर पर ॥१८॥

सब जग व्यवहार में जागृत है, निश्चय में सोता निश्चय से।
वे गुरुवर जाग्रत निश्चय में, व्यवहार में सोते निश्चय से ॥ १९ ॥

एकान्त सिद्ध पद के साधक उपदेश सिद्ध पद का देते।
गुरु सा उपकारी क्या कोई, भव की सब पीड़ा हर लेते ॥ २० ॥

मैं नमूं नमूं हे देव तुम्हें, नमूं नमूं भगवती जिनवाणी।
मैं नमूं नमूं गुरु चरण कमल, ज्यों पाऊं शिव सुन्दर रानी ॥ २१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय जिनराजा, सिद्ध समाजा, जय जय माता जिनवाणी।
जय जय श्री गुरुवर, करुणा सागर, देहु सिद्धपद सुखदानी ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, भगवती जिनवाणी माता के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं ।

तीन जगत में सार, देव-शास्त्र-गुरु रतनत्रय,
नमूं त्रियोग संभार, आप प्रसाद शिवपद लहूँ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री षोड़शकारण पूजा

मोह-अज्ञानवश देख, दुखी सब लोक को।
उपजी करुणा विशेष, जग दुख हरन को॥
बंधी तीर्थंकर प्रकृति, तीर्थनायक बने।
कर निज सम बहु भव्य, कर्म आठों हने॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़शकारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़शकारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ले ज्ञानानन्द निर्मल नीर, पूजों जिनवर गुण गंभीर।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़शकारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

चन्दन ज्ञानानन्द बनाय, पूजों श्री जिनवर के पांय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चन्दनं ।

अक्षत ज्ञानानन्द अनूप, पूजूं जिनवर तिहुं जग भूप ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं ।

ज्ञानानन्द पुष्प ले सार, पूजूं जिनवर जग आधार ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप काम बाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं ।

ज्ञानानन्द सरस पकवान, पूजूं श्री जिनवर गुणखान ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतना-रूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द दीप तमहार, पूजू श्री जिन केवलधार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पदपाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थ ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञानानन्द धूप शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरश० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविन्द को अष्ट कर्म विध्वंस-नार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ज्ञानानन्द सरस फल सार, पूजूं जिन वांछित दातार।
परमगुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ दरश० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविन्द को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञानानन्द अष्ट गुणकार, पूजूं श्री जिन मोक्ष दातार।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

अष्टांग सहित शुद्धातम प्रीति, दर्शन विशुद्धि ये मुक्ति रीति।
दृग-ज्ञान-चरित्र-तप का जो मान, सो विनय संपन्नता गुण महान ॥१॥

अतिचार रहित व्रत पंचधार, सो शील करै स्व-पर उद्धार।
स्वसंवेदन युत धारा ज्ञान, ये अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग जान ॥ २ ॥

संसार विरक्ति संवेग भाव, शुद्धातम रमण का महा चाव।
ज्ञायक स्वभाव पर त्यागरूप, स्थिरता शक्तितस्त्याग रूप ॥ ३ ॥

चित् प्रतपन पर इच्छा निरोध, शक्तितस्तप कह्यो आतमशोध।
उपसर्ग घोर तो भी आतमलीन, सो साधु समाधि कही जिन प्रवीण ॥४॥

रोगी मुनि वैयावृत्य सार, सो करै स्व-पर आतम उद्धार।
अरहंत भक्ति द्रव्य-गुण पर्याय, स्वसंवेदन युत शिव सहाय ॥ ५ ॥

आचार्य भक्ति मन-वचन-काय, दे पंचाचार आनन्ददाय।
वहु श्रुतवन्तों की भक्ति सार, श्रुत ज्ञान पूर्ण दे सौख्यकार ॥ ६ ॥

ज्ञानी की प्रवचन भक्ति जान, प्रगटावै शीघ्र ही ज्ञान भान।
स्व वश रहे पर वश नहीं होय, निश्चय युत आवश्यक छह सोय ॥ ७ ॥

स्व पर में करै जो धर्म प्रभाव, सो शीघ्र होय निर्वाण राव।
उमड़ै वात्सल्य जग दुखी देख, सो बने तीर्थनायक महेश ॥ ८ ॥

ये सोलह कारण भाव सार, वर्ते सुमेल निश्चय-व्यवहार।
शुद्ध निश्चय शुभ व्यवहार जान, शुभ वन्ध शुद्ध निर्जर महान ॥ ९ ॥

यों होय तीर्थंकर प्रकृति वन्ध, हो प्रगट तीर्थ साधै अबन्ध।
ये तीर्थ हेतु भावना महान, दें मुमुक्षु जीव को इष्ट दान ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय सोलह कारण, तीर्थ प्रकाशन, दुःख निवारन सुखकारी।
मैं पुनि पुनि भाऊं, शिव सुख पाऊं, तीर्थेश्वर पद बलिहारी ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना भावक सर्व तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थ ज्ञानानंद महार्घं ।

तीर्थंकर पदकार, षोड़श कारण भावना।
तीर्थं उदय सुखकार, या प्रसाद शिवपद लहूँ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीस चौबीसी पूजन

ढाई द्वीप में पाँच-पाँच हैं, भरत और ऐरावत क्षेत्र।
जहां भूत-वर्तमान, भावी, तीस चौबीसी जिन जगनेत्र॥
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर करें स्व-पर कल्याण महान।
द्रव्य भावमय भक्ति भाव से, करूं मैं जिनवर का आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

मैं ज्ञानानन्द जल लायो, प्रभू को देख हर्षायो।
मोह-अज्ञान मल धोऊं, आप सम पूर्ण स्वच्छ होऊँ॥
रुला बहु भूल कर निज को, लखा अब भाग्य से प्रभु को,।
सात सौ बीस जिनराजा, करो सब सिद्ध मो काजा॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान, प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ले ज्ञानानन्द मय चन्दन, करूं जिनराज का पूजन।
मोह-अज्ञान संताप, दूर हों नाथ सब पाप ।।
रुला बहु भूल कर निजको, लखा अब भाग्य से प्रभु को।
सात सौ बीस जिनराजा, करो सब सिद्ध मो काजा ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद **चंदनं**।

मैं ज्ञानानन्द अक्षत से, प्रभू पूजूं सुधा बरसै।
अक्षत हूँ मैं अक्षत होऊं, प्रभू ढिग दोष सब खोऊं ।। रुला० ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद **अक्षतं**।

सुमन ले ज्ञान आनन्दमय, प्रभु पूजूं सदा चिन्मय।
कर्म कर्तृत्व सब खोऊं, सहज कृतकृत्य मैं होऊं ।। रुला० ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप काम बाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **पुष्पं**।

सरस पकवान ज्ञानानन्द, लेय मैं पूजों श्री जिनचन्द।
क्षुधा पर चाह सब खोऊं, तृप्त चिन्मात्र में होऊं।।
रुला बहु भूल कर निज को, लखा अब भाग्य से प्रभु को।
सात सौ बीस जिनराजा, करो सब सिद्ध मो काजा ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद **नैवेद्यं**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये ज्ञानानन्द मय दीपक, जगत में एक स्व-पर दर्शक।
मोह-अज्ञान तम खोऊं, आप सम पूर्ण ज्ञान होऊं॥
रुला बहु भूल कर निज को, लखा अब भाग्य से प्रभु को।
सात सौ बीस जिनराजा, करो सब सिद्ध मो काजा॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

धूप ले ज्ञान आनन्द की, करूं पूजा मैं निष्कर्म की।
यों कर्म कलंक सब खोऊं, पूर्ण निष्कर्म प्रभु होऊं॥ रुला०॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ले ज्ञानानन्द फल प्यारा, पूजूं मैं मोक्ष दातारा।
कर्म फल सर्व ही खोऊं, महाफल मोक्षमय होऊं॥ रुला०॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पांच भरत, पांच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धि रूप मोक्ष महा फल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

आठ द्रव्य ज्ञान आनन्दमय, अर्घ ले पूजूं प्रभु चिन्मय।
यों आठों कर्म सब खोऊं, आठ गुण सहित सिद्ध होऊं॥
रुला बहु भूल कर निज को, लखा अब भाग्य से प्रभु को।
सात सौ बीस जिन राजा, करो सब सिद्ध मो काजा॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पाँच भरत, पाँच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भरत क्षेत्र दक्षिण दिश माजै।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के बहत्तर जिन ॥
पंच कल्याणक धारी जिनवर, पूजें इन्द्र, गणधर, मुनिवर।
असंख्य-असंख्य भव्य हित-हेतु, पूजूं प्रभु भवसागर-सेतु ॥ १ ॥

मेरु सुदर्शन उत्तरदिश में, क्षेत्र ऐरावत विस्तृत जग में।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौवीसी के वहत्तर जिन।
पंच कल्याणकधारी जिनवर, पूजें इन्द्र, गणधर, मुनिवर।
असंख्य-असंख्य भव्य हित-हेतु, पूजूं प्रभु भवसागर-सेतु ॥ २ ॥

धातुकी खंड में मेरु दो हैं, विजय-अचल जिन नाम कहे हैं।
पूर्व भाग में विजय विराजै, भरत क्षेत्र दक्षिण दिश साजै ॥
भूत, वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के वहत्तर जिन।
पंच कल्याणकधारी जिनवर, पूजें इन्द्र, गणधर, मुनिवर।
असंख्य-असंख्य भव्य हित-हेतु, पूजूं प्रभु भवसागर-सेतु ॥ ३ ॥

विजय मेरु की उत्तर दिश में, क्षेत्र ऐरावत विस्तृत जग में।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के वहत्तर जिन० ॥ ४ ॥

पश्चिम भाग में अचल विराजै, भरत क्षेत्र दक्षिण दिश साजै।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौवीसी के वहत्तर जिन० ॥ ५ ॥

अचल मेरु की उत्तर दिश में, क्षेत्र ऐरावत विस्तृत जग में।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के वहत्तर जिन० ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्करार्ध में मेरु दो हैं, मंदर-विद्युन्माली कहे हैं।
पूर्व भाग में मन्दर राजै, भरत क्षेत्र दक्षिण दिश साजै।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के बहत्तर जिन० ॥ ७ ॥

मन्दर मेरु की उत्तरदिश में, क्षेत्र ऐरावत विस्तृत जग में।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के बहत्तर जिन० ॥ ८ ॥

पश्चिम विद्युन्माली राजै, भरत क्षेत्र दक्षिण दिश साजै।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के बहत्तर जिन० ॥ ९ ॥

विद्युन्माली उत्तर दिश में, क्षेत्र ऐरावत विस्तृत जग में।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीन चौबीसी के बहत्तर जिन० ॥ १० ॥

ढाई द्वीप के पांच-पांच हैं, भरत-ऐरावत तीर्थ क्षेत्र हैं।
भूत-वर्तमान-भावी जिन, तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिन ॥
पंच कल्याणक धारी जिनवर, पूजें, इन्द्र, गणधर, मुनिवर।
असंख्य-असंख्य भव्य हित-हेतु, पूजूं प्रभु भवसागर-सेतु ॥ ११ ॥

जय जय जिनराजा, धर्म जिहाजा, आत्मसिद्धि कर मुक्त भये।
मैं प्रभु गुण गाऊं, शिवपद पाऊं, भव नहीं धारूं नये-नये ॥

ॐ ह्रीं श्री पंच मेरु सम्बन्धी पाँच भरत, पाँच ऐरावत क्षेत्रों के भूत, वर्तमान, भावी तीस चौबीसी के ७२० जिनेन्द्र भगवान प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थ ज्ञानानंद महार्घं।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्ध परिणति बनी,
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतमधनी,
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोह वश,
आप प्रसाद से शुद्ध, हो वर्तें आत्मवश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा

धर्म क्षेत्र विदेह में, सीमंधरादि जिनराज ।
वर्तमान तीर्थेश प्रभु, नमूं करो सिद्ध काज ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ज्ञानानन्द निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं ।
मिटे मोह अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं ।।
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं ।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

ज्ञानानन्द चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै ।
जिन चरणन देऊं चढ़ाय, दुख अज्ञान हरै ।।
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं ।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षत ज्ञानानन्द सार, अक्षय पदकारो।
मिटे सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी ॥
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थ ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञानानन्द सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महा गुणवान, अनुपम सुखकारी ॥ सीमंधर० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

नेवज ज्ञानानन्द रूप, प्रभु ढिग भेट धरूं।
मिटे क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं ॥ सीमंधर ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

दीपक ज्ञानानन्द सार, धारों प्रभु आगे।
मिटे मोह अज्ञान अन्धकार, ज्ञान रवि जागे ॥
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कम सभी डारूं ।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारूं ॥
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं ।

ज्ञानानन्द फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में ।
मैं पाऊं सिद्ध पद इष्ट, प्रभु के चरनन में ॥
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं ।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धि रूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं ।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घ करूं ।
करूँ आतम विलास सुठाठ, भव तर मोक्ष वरूं ॥
सीमंधर आदि जिनेश, क्षेत्र विदेह बसैं ।
मन-वच-तन पूजूं हमेश, कर्म कलंक नशैं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

ढाई द्वीप में पांच हैं, धर्म क्षेत्र विदेह।
जहां शाश्वत जिन बीस हैं, वन्दूं धर्म स्नेह ॥

जम्बूद्वीप विदेह मंझार, वर्तें चार जिनेश्वर सार।
मोक्ष मार्ग जहां सदा प्रशस्त, और रहे मिथ्यातम अस्त ॥ १ ॥

मेरु पूर्व में उत्तर खंड, सीमंधर जिन सूर्य प्रचंड।
युग्मंदर प्रभु दक्षिण खंड, धर्मामृत बरसावैं अखंड ॥ २ ॥

मेरु पश्चिम में दक्षिण भाग, बाहु जिनेश्वर करें शिवमार्ग।
प्रभु सुबाहु जिन उत्तर खंड, धर्मामृत बरसावैं अखंड ॥ ३ ॥

धातुकी खंड में मेरु दोय, विजय और अचल कहे सोय।
विदेह क्षेत्र उनके एक-एक, चार-चार जिन तहां प्रत्येक ॥ ४ ॥

विजय पूर्व में उत्तर खंड, संजातक जिन सूर्य प्रचंड।
स्वयंप्रभु जिन दक्षिण खंड, धर्मामृत बरसावैं अखंड ॥ ५ ॥

विजय पश्चिम में दक्षिण भाग, ऋषभानन जिन करैं शिव मार्ग।
अनन्तवीर्य जिन उत्तर खंड, धर्मामृत बरसावैं अखंड ॥ ६ ॥

अचल पूर्व में उत्तर खंड, सूर्यप्रभु जिन सूर्य प्रचंड।
विशालकीर्ति प्रभु दक्षिण खंड, धर्मामृत बरसावै अखंड ॥ ७ ॥

अचल पश्चिम में दक्षिण भाग, वज्रधर जिन करैं शिवमार्ग।
चंद्रानन जिन उत्तर खंड, धर्मामृत बरसावैं अखंड ॥ ८ ॥

पुष्करार्द्ध में मेरु दोय, मंदर विद्युन्माली सोय।
विदेह क्षेत्र उनके एक-एक, चार-चार जिन तहां प्रत्येक ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंदर पूर्व में उत्तर खंड, भद्रबाहु जिन सूर्य प्रचंड।
दक्षिण खंड भुजंगम देव, धर्मामृत बरसावें स्वयमेव ॥ १० ॥

मंदर पश्चिम दक्षिण भाग, ईश्वर जिनवर करें शिवमार्ग।
नेमि प्रभु जिन उत्तर खंड, धर्मामृत बरसावें अखंड ॥ ११ ॥

विद्युन्माली पूर्वोत्तर खंड, वीरसेन जिन सूर्य प्रचंड।
महाभद्र जिन दक्षिण खंड, धर्मामृत बरसावें अखंड ॥ १२ ॥

पश्चिम में जो दक्षिण भाग, देवयश जिन करैं शिवमार्ग।
अजितवीर्य जिन उत्तर खंड, धर्मामृत बरसावें अखंड ॥ १३ ॥

यों बीसों जिन परम पुनीत, पांच कल्याण सहित जगमीत।
कोटि पूर्व निज आयु प्रमाण, करैं स्व-पर कल्याण महान ॥ १४ ॥

जय जय जिनराजा, धर्म जिहाजा, विद्यमान जिन दया करो।
दे चरण शरण, हर जन्म मरण, प्रभु वेग भवार्णव पार करो ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सीमंधरादि विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

भरत क्षेत्र मंझार, अभी जिन योग न।
आप विदेह मंझार, वियोग ये सह्य न ॥
करूं परोक्ष मैं भक्ति, प्रत्यक्ष प्रभु को लखूं।
आप प्रसाद से मुक्ति, सुधा रस को चखूं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चौबीस जिन पूजा

धर्म हुआ जब क्षीण, प्रभू तब अवतरे।
भव्यों को संबोध, आप सदृश करे।।
चौबीसों जिनराज, अबै मो उर बसौ।
करो धर्म प्रकाश, कलंक सबै नशौ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीं परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ज्ञानानन्द निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं।
मिटे मोह अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं।।
चौबीसों जिन भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महा कल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

ज्ञानानन्द चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै।
जिन चरनन देऊँ चढ़ाय, दुख-अज्ञान हरै।। चौबीसों० ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षत ज्ञानानन्द सार, अक्षय पदकारी।
मिटे सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी॥
चौबीसों जिन भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञानानन्द सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महा गुणवान, अनुपम सुखकारी॥ चौबीसों० ॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

नेवज ज्ञानानन्द रूप, प्रभु ढिंग भेट धरूं।
मिटे क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं॥ चौबीसों० ॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतना रूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

दीपक ज्ञानानन्द सार, धारों प्रभु आगे।
मिटे मोह-अज्ञान अन्धकार, ज्ञान रवि जागे॥
चौबीसों जिन भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महा कल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारू'।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारू'॥
चौबीसों जिन भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महा कल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ज्ञानानन्द फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में।
मैं पाऊँ सिद्ध पद इष्ट, प्रभु के चरणन में॥ चौबीसों०॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धि रूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घं करू'।
करू' आतम विलास सुठाठ, भवतरि मोक्ष वरू'॥ चौबीसों०॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

पंच कल्याणक

अन्तिम गर्भ महासुखकार, भवसागर से उतरे पार।
अनन्त गुणातम आतम शुद्ध, तीन ज्ञान युत महा प्रबुद्ध॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव गर्भ कल्याणक प्राप्त भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म हुआ जब अति ही क्षीण, तब धर्मेश्वर जन्मे प्रवीण।
जन्म शृंखला नाशक जन्म, त्रिभुवन सुखदायक प्रभु जन्म ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव जन्म कल्याणक प्राप्त भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

भव-तन-भोग परम वैराग, शुद्धातम रस में चितपाग।
अन्तर-बाह्य धर्यौ तपसार, तपकल्याण महा हितकार॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव तप कल्याणक प्राप्त भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

शुक्ल ध्यान कर कर्म विनाश, पायो केवल ज्ञान प्रकाश।
कियो स्व-पर कल्याण महान, ज्ञान कल्याण महागुण खान ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव ज्ञान कल्याणक प्राप्त भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

योग निरोध सब कर्म खिपाय, स्वात्मोपलब्धि सिद्धपद पाय।
रहैं अनन्तानन्त सुकाल, करै मोक्ष कल्याण निहाल॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव मोक्ष कल्याणक प्राप्त भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौवीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

जय जय जय जय श्री तीर्थंनाथ, भव सिन्धु में दीन अनाथ नाथ।
लख मोह-अज्ञान वश दुखीलोक, उपजी करुणा वात्सल्य थोक ॥ १ ॥

तीर्थंकर प्रकृति बंधी स्वयमेव, अवतरे परम देवाधिदेव।
जग-जीव गर्भ में कष्ट देत, प्रभु गर्भ मात को सौख्य हेतु ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन्मत ही त्रिभुवन हर्ष होय, आदर्श जन्म प्रभु का यों सोय।
अणुव्रत युत प्रभु का गृह निवास, ज्यों जल में कमल रहै उदास ॥ ३ ॥

आतमहित की एक मात्र चाह, रह्यो भव-तन-भोग विराग अथाह।
कोई कारण लख वैराग्य उग्र, प्रगट्यो लौकांतिक नमें अग्र ॥ ४ ॥

सिद्धन को तब करके प्रणाम, जिन दीक्षा धारी गुण निधान।
प्रभु मौन सहित तप कियो घोर, चित् परिणति शुद्धातम विभोर ॥ ५ ॥

क्षायिक समकित युत परम देव, मैं ज्ञानमूर्ति श्रद्धा स्वयमेव।
मैं ज्ञानमूर्ति यों आत्मज्ञान, वर्ते अनुभव युत स्व-परभान ॥ ६ ॥

प्रभु तीन कषाय का कर अभाव, झूले प्रमत्त-अप्रमत्त राव।
यों धर्म ध्यान कियो प्रभु महान, क्षण-क्षण असंख्य गुण कर्म हानि ॥७॥

फिर शुक्ल ध्यान से कर्म नाश, पायो अनन्त आतम प्रकाश।
जहां केवल ज्ञान करे विलास, सुख-दरश-वीर्य अनुपम विकास ॥ ८ ॥

दिव्यध्वनि प्रगटी सहज रूप, प्रगटायो शुद्ध चिदात्म भूप।
षट् द्रव्य और पंचास्तिकाय, सप्त तत्त्व पदार्थ नव बताय ॥ ९ ॥

उपयोग रूप तहां जीव सार, दर्शायो प्रभुने निर्विकार।
कह्यो उपादेय ये अन्य हेय, शुद्धात्म प्रीति ये शिव करेय ॥ १० ॥

शुद्धात्म रुचि युत स्व-पर ज्ञान, शुद्धात्म रमण चारित्र जान।
निश्चय रत्नत्रय मोक्ष मार्ग, है भेद रूप व्यवहार मार्ग ॥ ११ ॥

निश्चय प्रतिपादक है व्यवहार, पर निश्चय आश्रित मोक्ष सार।
साधक को निश्चय अरु व्यवहार, यथायोग्य सुमेल आनन्दकार ॥ १२॥

यों मोक्ष मार्ग का सदुपदेश, कियो भव्यों को आनन्द विशेष।
कियो धर्म तीर्थ अनुपम महान, अनगिनत जीव किये निज समान ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर योग निरोध अयोगो होय, सब कर्म कलंक विशेष खोय।
ले साथ अनेक भव्य जीव, पायो शिवपद त्यों रहे सदीव ॥१४॥

जय जय चिद्राजा, धर्म जिहाजा, आत्मसिद्धि कर मुक्त भये।
मैं प्रभु गुण गाऊं, शिव पद पाऊं, भव नहीं धारूं नये नये ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्ध परिणति बनी,
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतम धनी,
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोह वश !
आप प्रसाद से शुद्ध हो, वर्ते आत्म वश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री जिन पूजा

धर्म हुआ जब क्षीण, प्रभू तब अवतरे,
भव्यों को संबोध, आप सदृश करे।
श्री *आदिनाथ जिनराज, अबै मो उर बसो,
करो धर्म प्रकाश, कलंक सबै नशो ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र !
अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र !
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र !
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ये मोह और अज्ञान, कर्ममल दुखकारी।
प्रभु शुद्ध चिदानन्द खान, अनुपम सुखकारी ॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर ॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, मैल हरो क्षण में ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

---

* आदिनाथ भगवान के स्थान पर किन्हीं भी अन्य भगवान का नाम आ सकता है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु वचन हरैं भवताप, भव्यों को प्यारे।
मिथ्या विभाव संताप, दुःख हरैं सारे॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, ताप हरो क्षण में॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चन्दनं।

अक्षत शुद्धातम आप, अक्षत ही परिणति।
प्रभु आप चरण प्रताप, अक्षत हो परिणति॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, अक्षत करो क्षण में॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

प्रभु शील शिरोमणि आप, सर्व विभाव हरे।
शुद्धातम तिष्ठैं आप, हो रक्षक मेरे॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, काम हरो क्षण में॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु शुद्धातम संतृप्त, पर की चाह मिटी।
पर चाह क्षुधाग्नि अतृप्त, मेरी नांहि मिटी ॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर ॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, क्षुधा हरो क्षण में। ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

चेतन की ज्योति प्रकाश, प्रभु तन मांहि लसै।
मिटे मोह अज्ञान की राशि, ज्ञान रवि दरशै ॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर ॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, तिमिर हरो क्षण में॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञानानन्द धूप सुवास, आतम विभोर करै।
प्रभु कर्म किये सब नाश, पूजा सौख्य करै ॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर ॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, कर्म हरो क्षण में ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु मोक्ष महा फल खान, सौख्य अनन्त धरो।
मेरे कर्म-फल विद्यमान, सो ही वेग हरो॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, मोक्ष करो क्षण में॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धि रूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण धार, आप वसो निज में।
यें ही मैं अर्घ संवार, आयो चरनन में॥
श्री आदिनाथ भगवान, भरत के तीर्थेश्वर।
कियो स्व-पर महाकल्याण, अनुपम सिद्धेश्वर॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, पूर्ण करो क्षण में॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

पंचकल्याणक

अन्तिम गर्भ महा सुखकार, भवसागर से उतरे पार।
अनन्त गुणातम आतम शुद्ध, तीन ज्ञान युत महा प्रबुद्ध॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव गर्भ कल्याणक प्राप्त भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म हुआ जब अति ही क्षीण, तब धर्मेश्वर जन्मे प्रवीण।
जन्म शृंखला नाशक जन्म, त्रिभुवन सुखदायक प्रभु जन्म ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव जन्म कल्याणक प्राप्त भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

भव-तन-भोग परम वैराग, शुद्धातम रस में चित्त पाग।
अन्तर-वाह्य धर्‌यौ तप सार, तप कल्याण महा हितकार ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव तप कल्याणक प्राप्त भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

शुक्ल ध्यान कर कर्म विनाश, पायौ केवल ज्ञान प्रकाश।
कियो स्व-पर कल्याण महान, ज्ञान कल्याण महा गुण खान ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव ज्ञान कल्याणक प्राप्त भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

योग निरोध सब कर्म खिपाय, स्वात्मोपलब्धि सिद्धपद पाय।
रहैं अनन्तानन्त सुकाल, करै मोक्ष कल्याण निहाल ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव मोक्ष कल्याणक प्राप्त भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

जयमाल

जय जय जय जय श्री तीर्थनाथ, भवसिन्धु में दीन अनाथ नाथ।
लख मोह-अज्ञान वश दुखीलोक, उपजी करुणा वात्सल्य थोक ॥ १ ॥

तीर्थंकर प्रकृति बंधी स्वयमेव, अवतरे परम देवाधिदेव।
जग-जीव गर्भ में कष्ट देत, प्रभु गर्भ मात को सौख्य हेतु ॥ २ ॥

जन्मत ही त्रिभुवन हर्ष होय, आदर्श जन्म प्रभु का यों सोय।
अणुव्रत युत प्रभु [illegible] निवास, ज्यों जल में कमल रहै उदास ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आतम हित की एक मात्र चाह, रहै भव-तन-भोग विराग अथाह।
कोई कारण लख वैराग्य उग्र, प्रगट्यो लौकांतिक नमें अग्र ॥ ४ ॥

सिद्धन को तब करके प्रणाम, जिनदीक्षा धारी गुणनिधान।
प्रभु मौन सहित तप कियो घोर, चित् परिणति शुद्धातम विभोर ॥५॥

क्षायिक समकित युत परम देव, मैं ज्ञानमूर्ति श्रद्धा स्वयमेव।
मैं ज्ञानमूर्ति यों आतम ज्ञान, वर्तै अनुभव युत स्व-पर भान ॥ ६ ॥

प्रभु तीन कषाय का कर अभाव, झूले प्रमत्त-अप्रमत्त राव।
यों धर्म ध्यान कियो प्रभु महान, क्षण क्षण असंख्य गुण कर्म हानि ॥७॥

फिर शुक्ल ध्यान से कर्म नाश, पायो अनन्त आतम प्रकाश।
जहां केवल ज्ञान करै विलास, सुख-दरश-वीर्य अनुपम विकास ॥ ८ ॥

दिव्यध्वनि प्रगटी सहज रूप, प्रगटायो शुद्ध चिदात्म भूप।
षट् द्रव्य और पंचास्तिकाय, सप्त तत्त्व पदार्थ नव बताय ॥ ९ ॥

उपयोग रूप तहां जीवसार, दर्शायो प्रभु ने निर्विकार।
कह्यो उपादेय ये अन्य हेय, शुद्धात्म प्रीति ये शिव करेय ॥ १० ॥

शुद्धात्म रुचि युत स्व-पर ज्ञान, शुद्धात्म रमण चारित्र जान।
निश्चय रत्नत्रय मोक्ष मार्ग, है भेद रूप व्यवहार मार्ग ॥ ११ ॥

निश्चय प्रतिपादक है व्यवहार, पर निश्चय आश्रित मोक्षसार।
साधक को निश्चय अरु व्यवहार, यथायोग्य सुमेल आनन्दकार ॥१२॥

यों मोक्ष मार्ग का सदुपदेश, कियो भव्यों को आनन्द विशेष।
कियो धर्म तीर्थ अनुपम महान, अनगिनत जीव किये निज समान ॥१३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर योग निरोध अयोगी होय, सब कर्म कलंक विशेष खोय।
ले साथ अनेक भव्य जीव, पायो शिवपद त्यों रहैं सदीव ॥ १४ ॥

जय जय चिद्राजा, धर्म जिहाजा, आत्मसिद्धि कर मुक्त भये।
मैं प्रभु गुण गाऊं, शिवपद पाऊं, भव नहीं धारूं नये नये ॥

ॐ ह्लीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान आदिनाथ जिनेन्द्र के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्ध परिणति बनी,
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतमधनी !
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोहवश,
आप प्रसाद से शुद्ध हो, वर्तें आतमवश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5343

श्री सिद्ध पूजा

ध्रुव, अचल, अनुपम गति, पाय भये शिवराज।
शुद्ध चिदानन्द लीन हो, सिद्ध करो मो काज ।। १ ।।

सिद्ध सम निज आतम लखैं, भक्त सिद्ध हो जांय।
अनुपम भव्यादर्श हो, नमूं नमूं प्रभु पांय ।। २ ।।

युगपत् युगपत् सिद्ध नमूं, नमूं प्रत्येक प्रत्येक।
द्रव्य-भाव वंदन करूं, मो उर बसो हमेश ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

समरस एक सुधारस धार, निज मन मणि भाजन में डार।
महा गुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान ।।
सकल बोध रमणीय स्वरूप, पूजूं सहज सिद्ध शिवभूप।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्वसिद्ध भगवान ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमल भाव चंदन अतिसार, कर्म कलंक मिटावन हार।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥
अनुपमान गुणावली नाथ, पूजूं सहज सिद्ध शिवसाथ॥
महागुण खान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद **चंदनं**।

सहज भाव शुभ तंदुल धार, सर्व दोष अति शोधनहार।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥
अनुपरोध सुबोध निधान, पूजूं सहज सिद्ध भगवान।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद **अक्षतं**।

समयसार सुपुष्प शुभमाल, सहज ज्ञप्ति से शोध संभाल।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान।
परम योग बल जीता काम, पूजं सहज सिद्ध निष्काम।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परम देवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **पुष्पं**।

अकृत बोध सरस पकवान, करै जन्म जरा मृत्यु हान।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरवधि प्रचुर आत्म गुणखान, पूजूं सहज सिद्ध भगवान।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान ।। ५ ।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद **नैवेद्यं**।

सहज रत्न रुचि दीपक धार, रुचि विभूति तम नाशन हार।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान।।
निरवधि आत्म विकास-प्रकाश, पूजूं सहज सिद्ध गुणराशि।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान ।। ६ ।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अंधकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद **दीपं**।

निज गुण अक्षय रूप सुधूप, नष्ट करै निज गुणमल रूप।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान।।
विशद बोध सुदीर्घ सुखात्म, पूजूं सहज सिद्ध परमात्म।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान ।। ७ ।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **धूपं**।

परम भाव फलावली धार, सहज भाव कुभाव निवार।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान।।
निर्मल निज आतम गुण व्यक्त, पूजूं सहज सिद्ध रज त्यक्त।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान ।। ८ ।।
ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद **फलं**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्ध भावमय ज्ञान स्वरूप, अष्ट द्रव्य ले जजूं शिव भूप।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥
अचल, अगाध चिदानन्द भोग, पूजूं सहज सिद्ध शिव योग।
महागुणखान, महागुणखान, पूजूं सर्व सिद्ध भगवान॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

जय जय जय जय श्री सिद्ध राज, भवसागर में अद्भुत जिहाज
लख सिद्ध सम निज आतम मुमुक्षु, हुए, होंग, होंयगे विश्व चक्षु॥१॥

समकित क्षायिक युत परम देय, मैं ज्ञानमूर्ति श्रद्धा स्वयमेव।
कारण परमात्मा अचल रूप, निगोद सिद्ध में एक चिद्रूप॥ २॥

क्षायिक ज्ञान अनुपम महान, अनुभवै सतत चैतन्य खान।
जानै स्व-पर सब तीन काल, युगपत् सर्वज्ञ सदा निहाल॥ ३॥

क्षायिक दर्शन वर्ते अनूप, लखै सतत स्व चित् सामान्य भूप।
युगपत् देखै सामान्य विश्व, वेदै अन्तर निज आत्म विश्व॥ ४॥

उपभोग-भोग अरु दान-लाभ, क्षायिक वर्तें सब ही अथाह।
वीरज अनन्त स्वात्मोत्थ जान, रचै क्षण क्षण शुद्ध परिणति महान॥५॥

सुख अव्याबाध हुआ अनन्त, वेदैं क्षण क्षण प्रभु सिद्ध भगवंत।
इन्द्रियातीत सो सुख महान, जग में इसकी उपमा न जान॥ ६॥

चैतन्य देह नहीं जड़ शरीर, तिष्ठैं अचल सिद्ध गुण गम्भीर।
अवगाहन प्रभु का गुण महान, एक-एक में सिद्ध अनन्त जान॥ ७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्पज्ञ ज्ञान के विषय नांहि, यों सूक्ष्मत्व गुण प्रभु धरांहि ।
केवलज्ञान के विषय सिद्ध, नमूं सिद्ध प्रभू मुझे करो विशुद्ध ॥ ८ ॥

गुरुता लघुता ये सब संसार, हुए सिद्ध प्रभू संसार पार ।
अगुरुलघु प्रगट्यो गुण महान, नहीं ऊंच-नीच सब सिद्ध समान ॥ ९ ॥

इत्यादि सर्व गुण पूर्ण शुद्ध, प्रगटे सिद्धों को परम बुद्ध ।
साधक के हो आदर्श नाथ, स्वात्मोपलब्धि में सिद्ध साथ ॥ १० ॥

तीर्थेश जिन्हें करके प्रणाम, फिर साधैं निजात्मा गुण निधान ।
मुनि गणधरादि सेवैं अपार, प्रभु सिद्धन को हम नमस्कार ॥ ११ ॥

जय जय सिद्धराजा, धर्म जिहाजा, आत्म सिद्धि कर मुक्त भये ।
मैं प्रभु गुण गाऊं, शिव पद पाऊं भव नहीं धारूं नये नये ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं ।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्धपरिणति बनी,
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतम धनी ॥
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोहवश ।
आप प्रसाद से शुद्ध हो, वर्तें आतम वश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सिद्ध पूजा

ध्रुव अचल अनुपम गति, पाय भये शिवराज।
शुद्ध चिदानन्द लीन हो, सिद्ध करी मो काज ॥ १ ॥

सिद्ध सम निज आतम लखैं, भक्त सिद्ध हो जांय।
अनुपम भव्यादर्श हो, नमूं, नमूं प्रभु पांय ॥ २ ॥

युगपत् युगपत् सिद्ध नमूं, नमूं प्रत्येक प्रत्येक।
द्रव्य-भाव वंदन करूं, मो उर वसौ हमेश ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ज्ञानानन्द निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं।
मिटै मोह अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं॥
पूजूं श्री सिद्ध महान, त्रिभुवन के त्राता।
मैं पाऊं पद निर्वाण, अनुपम सुखदाता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द चंदन लाय, शीतल सौख्य करै।
प्रभु चरणन देऊं चढ़ाय दुख अज्ञान हरै॥
पूजूं श्री सिद्ध महान, त्रिभुवन के त्राता।
मैं पाऊं पद निर्वाण, अनुपम सुखदाता॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

अक्षत ज्ञानानन्द सार, अक्षय पदकारी।
मिटै सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी॥ पूजूं० ॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को अक्षय सिद्धपद विनाशनार्थं ज्ञानानन्द अक्षतं!

ज्ञानानंद सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महागुणवान अनुपम सुखकारी॥ पूजूं० ॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को सर्व कर्मचेतनारूप कामवाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानन्द पुष्पं।

नेवज ज्ञानानन्द रूप, प्रभु ढिग भेंट धरूं।
मिटै क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं॥
पूजूं श्री सिद्ध महान, त्रिभुवन के त्राता।
मैं पाऊं पद निर्वाण, अनुपम सुखदाता॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविन्द को सर्व कर्मफलचेतना-रूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानन्द नैवेद्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपक ज्ञानानन्द सार, धारौं प्रभु आगे।
मिटै मोह-अज्ञान अंधकार, ज्ञान रवि जागे॥
पूजूं श्री सिद्ध महान, त्रिभुवन के त्राता।
मैं पाऊं पद निर्वाण, अनुपम सुखदाता॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद **दीपं**।

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारूं।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारूं॥ पूजूं० ॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **धूपं**।

ज्ञानानन्द फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में।
मैं पाऊं सिद्ध पद इष्ट, प्रभु के चरणन में॥ पूजूं० ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद **फलं**।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घं करूं।
करूं आत्म विलास सुठाठ, भवतरि मोक्ष बरूं॥
पूजूं श्री सिद्ध महान, त्रिभुवन के त्राता।
मैं पाऊं पद निर्वाण, अनुपम सुखदाता॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को परिपूर्णसिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद **अर्घं**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

जय जय जय जय श्री सिद्ध राज, भवसागर में अद्भुत जिहाज ।
लख सिद्धसम निज आतम मुमुक्षु, हुए, होंय, होंयगे विश्व चक्षु ।। १ ।।

समकित क्षायिक युत परमदेव, मैं ज्ञानमूर्ति श्रद्धा स्वयंमेव ।
कारण परमात्मा अचल भूप, निगोद सिद्ध में एक चिद्रूप ।। २ ।।

क्षायिक ज्ञान अनुपम महान, अनुभवै सतत चैतन्य खान ।
जानै स्व-पर सब तीन काल, युगपत सर्वज्ञ सदा निहाल ।। ३ ।।

क्षायिक दर्शन वर्तै अनूप, लखै सतत स्व चित् सामान्य भूप ।
युगपत देखै सामान्य विश्व, वेदै अन्तर निज आत्म विश्व ।। ४ ।।

उपभोग-भोग अरु दान-लाभ, क्षायिक वर्तै सबही अथाह ।
वीरज अनन्त स्वात्मोत्थ जान, रचै क्षण क्षण शुद्ध परिणति महान ।।
।। ५ ।।

सुख अव्याबाध हुआ अनन्त, वेदैं क्षण क्षण प्रभु सिद्ध भगवंत ।
इन्द्रियातीत सो सुख महान, जग में इसकी उपमा न जान ।। ६ ।।

चैतन्य देह नहीं जड़ शरीर, तिष्ठैं अचल सिद्ध गुण गम्भीर ।
अवगाहन प्रभु का गुण महान, एक एक में सिद्ध अनन्त जान ।। ७ ।।

अल्पज्ञ ज्ञान के विषय नांहि, यों सूक्ष्मत्व गुण प्रभु धरांहि ।
केवल ज्ञान के विषय सिद्ध, नमूं सिद्ध प्रभू मुझे करो विशुद्ध ।। ८ ।।

गुरुता-लघुता ये सब संसार, हुए सिद्ध प्रभू संसार पार ।
अगुरुलघु प्रगट्यो गुण महान, नहीं ऊंच-नीच सब सिद्ध समान ।। ९ ।।

इत्यादि सर्व गुण पूर्ण शुद्ध, प्रगटे सिद्धों को परम बुद्ध ।
साधक के हो आदर्शनाथ, स्वात्मोपलब्धि में सिद्धसाथ ।। १० ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थेश जिन्हें करके प्रणाम, फिर साधैं निजात्मा गुणनिधान ।
मुनि गणधरादि सेवैं अपार, उन सिद्धन को हम नमस्कार ।। ११ ।।

जय जय सिद्धराजा, धर्म जिहाजा, आत्मसिद्धि कर मुक्त भये ।
मैं प्रभु गुणगाऊं, शिवपद पाऊं, भव नहीं धारूं नये नये ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव अनाहृत पराक्रम भगवान सिद्ध परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक सिद्ध परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद **महार्घं** ।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्ध परिणति बनी ।
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतम धनी ।।
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोह वश ।
आप प्रसाद से शुद्ध हो, वर्तें आत्म वश ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पंचपरमेष्ठी पूजा

अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि ।
परमेष्ठी पद पाय, वड़े आतम धनी ।।
भवसागर में पतित को, तुम ही शरण हो ।
मो उर तिष्ठौ आप, मैं शरण गहो प्रभो ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ज्ञानानन्द निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं ।
मिटे मोह अज्ञान की पोर, यातें धार करूं ।।
अरिहंत सिद्ध आचार्य, पाठक और मुनि ।
परमेष्ठी पद मैं ध्याय, होऊं आतम धनी ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान, के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै।
प्रभु चरनन देऊं चढ़ाय, दुख अज्ञान हरै।।
अरिहंत सिद्ध, आचार्य, पाठक और मुनि।
परमेष्ठी पद मैं ध्याय, होऊं आतम धनी।। २।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद **चंदनं**।

अक्षत ज्ञानानन्द सार, अक्षय पदकारी।
मिटेसर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी।। अरिहंत०।। ३।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद **अक्षतं**।

ज्ञानानन्द सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महागुणवान, अनुपम सुखकारी।। अरिहंत०।। ४।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **पुष्पं**।

नेवज ज्ञानानन्द रूप, प्रभु ढिग भेट धरूं।
मिटे क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं।।
अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, पाठक और मुनि।
परमेष्ठी पद मैं ध्याय, होऊं आतम धनी।। ५।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद **नैवेद्यं**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपक ज्ञानानन्द सार, धारों प्रभु आगे।
मिटे मोह-अज्ञान अन्धकार, ज्ञान रवि जागे ।।
अरिहंत, सिद्ध आचार्य, पाठक और मुनि ।
परमेष्ठी पद मैं ध्याय, होऊं आतम धनी ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं ।

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारूं ।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारूं ।। अरिहंत० ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को अष्टकर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं ।

ज्ञानानन्द फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में ।
मैं पाऊं पद सिद्ध पद इष्ट, प्रभु के चरनन में ।। अरिहंत० ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं ।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घ करूं ।
करूं आत्म विलास सुठाठ, भव तर मोक्ष वरूं ।।
अरिहंत, सिद्ध आचार्य, पाठक और मुनि ।
परमेष्ठी पद मैं ध्याय, होऊं आतम धनी ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

जय जय जय श्री अरिहंत देव, शत इन्द्र करैं प्रभु की सुसेव।
कर चार घातिया कर्म नाश, पायो अनुपम आतम प्रकाश ॥ १ ॥

तहां ज्ञान अनन्त अद्‌भुत विकास, युगपत् जानै सब जग विलास।
दर्शन अनन्त अद्‌भुत अनूप, युगपत् देखै सब जग स्वरूप ॥ २ ॥

और सुख अनन्त इन्द्रियातीत, अतिशय स्वात्मोत्पन्न अति पुनीत।
वीरज अनन्त स्वात्मोत्थ जान, रचै क्षण क्षण शुद्ध परिणति महान ॥३॥

इत्यादि अनन्त गुण परम शुद्ध, प्रगटे जिन सूर्य स्वयं बुद्ध।
मुनि गणधरादि सेवत महान, दिव्य ध्वनि करतो ज्ञान दान ॥ ४ ॥

जय जय जय श्री सिद्धराज, भवसागर में अद्‌भुत जिहाज।
लख सिद्ध मम निज आतम मुमुक्षु, हुए-होंय-होंयगे विश्वचक्षु ॥ ५॥

क्षायिक समकित और दर्श-ज्ञान, सुख अव्याबाध अनन्त जान।
वीरज अनन्त स्वात्मोत्थजान, रचै क्षणक्षण शुद्ध परिणति महान ॥६॥

अवगाहन सूक्ष्मत्व गुण महान, अगुरूलघु से सब सिद्ध समान।
यों आठ कर्म हत गुण हों आठ, करैं सिद्ध प्रभु आतम सुठाठ ॥ ७ ॥

इत्यादि सर्व गुण पूर्ण शुद्ध, प्रगटे सिद्धों को परम बुद्ध।
साधक के हो आदर्श नाथ, स्वात्मोपलब्धि में सिद्धसाथ ॥ ८ ॥

तीर्थेश जिन्हें करके प्रणाम, फिर साधैं निजात्मा गुणनिधान।
मुनि गणधरादि सेवैं अपार, प्रभु सिद्धन को हम नमस्कार ॥ ९ ॥

गणधर आदि आचार्य देव, जिन अनुसारी करैं स्वात्म सेव।
शुद्धात्म रूप में रहैं लीन, करैं क्षण क्षण में व्यवहार क्षीण ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कभी शुभोपयोग तब धर्म रूप, जिन शासन वर्तावें अनूप।
धरैं भव-तन-भोग विराग अथाह, वर्तें निज-परकल्याण चाह ॥ ११ ॥

हैं उपाध्याय महा ज्ञान रूप, लखैं शास्त्र-ज्ञान से निज स्वरूप।
पढ़ैं स्वयं पढ़ावें अन्य जीव, नमूं ज्ञानमूर्ति मैं सो सदीव ॥ १२ ॥

साधु साधैं शुद्धात्म योग, सम सुख-दुख एक चिदात्म भोग।
अन्तर्बाह्य तप धरैं सार, उन साधक को हम नमस्कार ॥ १३ ॥

जय जय जिनराजा, सिद्ध समाजा, जय जय गुरुवर दयानिधान।
मैं प्रभु गुण गाऊं, निज पद ध्याऊं, पाऊं सिद्ध पद अचल महान ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी पंच परमेष्ठी समूह प्रत्येक प्रत्येक पंच परमेष्ठी भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थ ज्ञानानंद महार्घं।

तीन जगत में सार, पंच परमेष्ठी परम पद।
नमू त्रियोग संवार, आप प्रसाद शिवपद चाहूँ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवती जिनवाणी पूजा

केवलज्ञान स्पर्श, जिनजी की ध्वनि छुटै।
भव्य करैं अति हर्ष, सर्व जड़ता मिटै॥
गूंथैं गणधरदेव, द्वादशांग रूप में।
प्रगटैं चिदानंद देव, अपूर्व स्वरूप में॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ज्ञानानन्द निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं।
मिटे मोह अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं॥
जिनवर की ध्वनि अति मिष्ट, मोह अज्ञान हरै।
दे शीघ्र सिद्ध पद इष्ट, परमानन्द करै॥१॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै।
तुम चरनन देऊं चढ़ाय, दुख-अज्ञान हरै॥
जिनवर की ध्वनि अति मिष्ट, मोह-अज्ञान हरै।
दे शीघ्र सिद्ध पद इष्ट, परमानन्द करै॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्‌भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

अक्षत ज्ञानानन्द सार, अक्षय पदकारी।
मिटे सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी॥ जिनवर०॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्‌भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञानानन्द सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महागुणवान, अनुपम सुखकारी॥ जिनवर०॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्‌भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

नेवज ज्ञानानन्द रूप, तुम ढिग भेंट धरूं।
मिटै क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं॥
जिनवर की ध्वनि अति मिष्ट, मोह-अज्ञान हरै।
दे शीघ्र सिद्ध पद इष्ट, परमानन्द करै॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्‌भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपक ज्ञानानन्द सार, धारौं तुम आगे।
मिटे मोह-अज्ञान अंधकार, ज्ञान रवि जागे ॥
जिनवर की ध्वनि अति मिष्ट, मोह-अज्ञान हरै।
दे शीघ्र सिद्ध पद इष्ट, परमानन्द करै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानन्द दीपं।

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारूं।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारूं॥ जिनवर० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को अष्टकर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानन्द धूपं।

ज्ञानानन्द फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में।
मैं पाऊं सिद्ध पद इष्ट, तेरे चरणन में॥
जिनवर की ध्वनि अति मिष्ट, मोह-अज्ञान हरै।
दे शीघ्र सिद्ध पद इष्ट, परमानन्द करै॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घ करूं।
करूं आत्म विलास सुठाठ, भव तर मोक्ष वरूं॥
जिनवर को ध्वनि अति मिष्ट, मोह-अज्ञान हरै।
दे शीघ्र सिद्ध पद इष्ट, परमानन्द करै॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवतो जिनवाणी के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

जय जय जय जिनवाणी मात, ओंकार द्वादशांगमय विख्यात।
जननीवत् पालन करै मुमुक्षु, खोलै स्व-पर भेद ज्ञान चक्षु ॥ १ ॥

पहला अंग आचारांग जान, कहै मुनि आचार त्रिभुवन प्रधान।
पद कहे अठारह सहस सार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञानसार ॥ २ ॥

दूजा अंग सूत्रकृत सो जान, ज्ञान-हेतु ज्ञान-विनय वखान।
पद कहे छत्तीस हजार सार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ३ ॥

तीजा अंग स्थान कहाय, जीवादि के बहु स्थान बताय।
पद कहे ब्यालीस हजार सार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ४ ॥

चौथा अंग समवाय निहार, करै द्रव्य-समानता का विचार।
पद एक लाख चौंसठ हजार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ५ ॥

व्याख्या प्रक्षप्ति अंग पांच, गणधर प्रश्नोत्तर कहे सांच।
पद दो लाख अट्ठाईस हजार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ६ ॥

अरु ज्ञातृकथा अंग छठा जान, महापुरुष कथाओं का बखान।
पद पांच लाख छप्पन हजार, मुनि मुक्ति होंय धर ज्ञान सार ॥ ७ ॥

सप्तम उपासकाध्ययन अंग, श्रावक आचार कहे सर्वंग।
पद ग्यारह लाख सत्तर हजार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ८ ॥

अष्टम है अंतकृत दशांग, दस दस उपसर्ग केवली कथांग।
पद तेईस लाख अट्ठाईस हजार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ९ ॥

अनुत्तर उपपादक नवम जान, दस दस उपसर्ग मुनि अनुत्तर विमान।
पद बानवे लाख सोलह हजार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रश्न व्याकरणांग दशम जान, प्रश्नों का व्याख्यान-समाधान।
पद त्रानवे लाख सोलह हजार, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान सार ॥ ११ ॥
विपाक सूत्र ग्यारहवां जान, जहां कर्म विपाक का वहु बखान।
पद एक करोड़ चौरासी लाख, मुनि मुक्त होंय धर ज्ञान साख ॥ १२ ॥
दृष्टिवाद बारहवां अंग जान, जिसके पंच भेद कहे महान।
पद एक सौ आठ करोड़ सार पंच, अड़सठ लाख छप्पन हजार ॥ १३ ॥
यों द्वादशांग वाणी महान, निश्चय-व्यवहार से करै बखान।
जहां प्रमाण-नय-निक्षेप सार, अनेकांत सप्तभंगी विचार ॥ १४ ॥
यों द्रव्यश्रुतसे भाव ज्ञान, करै शुद्धातम क्रीड़ा महान।
साधें ये अनुपम पूर्ण ज्ञान, याकी महिमा का न हो बखान ॥ १५ ॥
जय जय जिनवाणी, शिव सुखदानी, माता मुझ पर कृपा करो।
स्वपर भेद विज्ञान करा कर, शीघ्र सिद्ध पद-प्राप्ति करो ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव परमब्रह्मदर्शक शब्दब्रह्मस्वरूप भगवती जिनवाणी के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थ ज्ञानानंद महार्घं।

वाणी श्री जिनदेव की, करै मुमुक्षु-प्रतिपाल।
माता आशीर्वाद दो, वरूं मुक्ति तत्काल ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री बाहुबली जिन पूजा

प्रथम सिद्ध श्री बाहुबली इस काल के।
पूजों प्रभू के पांय, त्रियोग संभाल के।।
इस संसार अथाह महादुख कूप से।
काढ़ो मुझ को नाथ! पधारो वेग से।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्!

ये मोह-अज्ञान महा मल है, चिद् परिणति इससे चिर मैली।
प्रभु शुद्ध चिदानंद लीन आप, पाकर अनन्त निजगुण थैली।।
मैं भेदविज्ञान बिना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूं भववन में।
अब बाहुबली जिन शरण गही, मम मैल हरो प्रभु क्षणभर में।। १।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानन्द जलं।

प्रभु वचन हरें मिथ्या विभाव, भव्यों को प्यारे लगते हैं।
जिन वचन से लख निज परमातम, वे मोक्ष से क्रीड़ा करते हैं।।
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूँ भववन में।
अब बाहुबली जिन शरण गही, मम ताप हरो प्रभु क्षण भर में।। २।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षत शुद्धातम आप प्रभो, निज आश्रय से परिणति अक्षत।
मैं आप समान ही ध्रुव चेतन, पर आश्रित मेरी परिणति क्षत ॥
मैं भेद विज्ञान विना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अव वाहुबली जिन शरण गही, मम परिणति करो अक्षत क्षण में ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान वाहुवलीजी के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद **अक्षतं**।

प्रभु शील शिरोमणि आप ही हो, ध्यानाग्नि से काम सब नष्ट किया।
रत्नत्रय से भज ध्रुव चेतन, परमात्म सुधारस पूर्ण पिया ॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अव बाहुबली जिन शरण गही, मम काम हरो प्रभु क्षण भर में ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुवलीजी के चरणारविंद को सर्व कर्म-चेतनारूप कामवाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **पुष्पं**।

प्रभु शुद्धातम सतृप्त आप, पर की न चाह रही कुछ भी।
पार चाह अतृप्त क्षुधाग्नि है, मेरी न मिटी ये प्रभु अब भी ॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर! चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब बाहुवली जिन शरण गही, मम क्षुधा हरो प्रभु क्षण भर में ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद **नैवेद्यं**।

ध्रुव चिदानन्द परिपूर्ण प्रगट, प्रभु तन में केवल सूर्य दिपै।
युगपत् सर्वज्ञ त्रिकाल त्रिजग, अज्ञान-मोह तम सर्व भगै ॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब बाहुवली जिन शरण गही, मम तिमिर हरो प्रभु क्षण भर में ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद **दीपं**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ध्रुव चिदानन्द ध्यानाग्नि में, प्रभु कर्म आप सब भस्म किये।
निष्कर्म होय परमानन्दमय ज्ञानादि अनन्त गुण प्रगट किये॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब बाहुबली जिन शरण गही, मम कर्म हरो प्रभु क्षण भर में॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविन्द को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

प्रभु मोक्ष महा फल खान आप, अनुपम अनन्त सुख सदा धरो।
अभी मुझे कर्मफल विद्यमान, प्रभु मेरी रक्षा शीघ्र करो॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब बाहुबली जिन शरण गही, मम मोक्ष करो प्रभु क्षण भर में॥८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धि रूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण आठ धार, प्रभु आप बसो निज आतम में।
सो ही मैं आठ गुण अर्घ लेय, अब आया प्रभु के चरणन में॥
मैं भेद विज्ञान बिना प्रभुवर, चिरकाल रुला हूँ भव वन में।
अब बाहुबली जिन शरण गही, मुझे पूर्ण करो प्रभु क्षण भर में॥९॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

जय जय जय श्री बाहुबली स्वामि, हुए प्रथम सिद्ध प्रभु जगत नामि।
पिता आदिनाथ के सुत द्वितीय, हुए शिवसाधक प्रभु अद्वितीय॥१॥

प्रभु चरमशरीरी कामदेव, अनुपम बल-रूप धरें स्वयमेव।
पिता आदिनाथ कर राज भाग, धारी जिनदीक्षा महाभाग॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भरतेश अयोध्या राज पाय, बाहुबली पोदनपुर नृप कहाय।
चक्री भरतेश षट्खंड जीत, जान्यो बाहुबली तो अभी अजीत ॥ ३ ॥

आज्ञा करी हमको नमो आय, हम चक्री षट् खंड जीत लाय।
प्रत्युत्तर बाहुबली दीयो पठाय, हम भी आदि-सुत स्वाधीन राय ॥ ४ ॥

तब युद्ध क्षेत्र में सजी सैन्य, मंत्रणा हुई ज्यों न कटै सैन्य।
दोनों भूपति करें स्वयं युद्ध, हों तीन नेत्र-जल-मल युद्ध ॥ ५ ॥

तीनों में हारे भरतराय, तब क्रोध से चक्र दीनों चलाय।
सो चक्र बाहुबली पास जाय, दीनी प्रदक्षिणा तीन आय ॥ ६ ॥

यों जग स्वरूप बाहुबली देख, कर क्षमा धरे मुनि व्रत विशेष।
एक वर्ष कियो कायोत्सर्ग, निश्चल पर्वत सम महा उग्र ॥ ७ ॥

चढ़ीं बेल प्रभु-तन चारों ओर, पर बाहुबली आतम विभोर।
सर्पों की बांबी पैर पास, पर बाहुबली चन्दन सुवास ॥ ८ ॥
आहार-विहार-निहार नांहि, क्षण क्षण चढ़ैं प्रभु शुद्धात्म मांहि।
पर उपज्यो नहीं अभी पूर्ण ज्ञान, अंतर रह्यो सूक्ष्म संज्वलन मान ॥९॥
मैं भरत भूमि पर खड़ो आय, यह विकल्प ज्ञान-बाधा कराय।
यह विकल्प आदि प्रभु से यों जान, भरतेश नमे बाहुबली को आन ॥
॥ १० ॥

मेरी नहीं पृथ्वी जड़ स्वरूप, मुझे शरण देहु चिदानन्द भूप।
हुआ तुरन्त केवल रवि प्रकाश, पायो अनन्त गुणश्री विलास ॥११॥
संबोधे बहु भव्य गुण निधान, षट् द्रव्यों में एक जीव महान।
सो जीव चिदानन्द रूप आप, अज्ञान-मोह वश सहै ताप ॥ १२ ॥
यों अनादि मलिन वर्तें पर्याय, पर जीव-स्वभाव नहीं मल लहाय।
सो बाहुबली जीव-शक्ति जान, अक्षय अनन्त ज्ञायक प्रमाण ॥ १३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्म सर्प बेल नहीं चलै जोर, साधक रहैं शुद्धातम विभोर।
यों शिवपथ भव्यों को दिखाय, हुए प्रथम सिद्ध बाहुबली राय ॥१४॥

जय जय चिद्राजा, धर्म जिहाजा, आत्मसिद्धि कर मुक्त भये।
मैं प्रभु-गुण गाऊँ, शिवपद पाऊँ, भव नहीं धारूं नये नये ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान बाहुबलीजी के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्ध परिणति बनी,
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतमधनी,
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोह वश,
आप प्रसाद से शुद्ध, हो वर्तें आतमवश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री अकंपनादि सात शतक मुनि पूजा

चेतन नित्य अकंपन, हुई वैसी परिणति।
अकंपनादि मुनि सात सौ, महाबल मूरती॥
हस्तिनापुर के बीच हुआ उपसर्ग अति।
ज्ञायक बल से जीत, अचल रही परिणति॥ १॥

धन्य धन्य मुनिराज, धैर्य के मेरु वे।
सिद्ध कियो निज काज, भव्य-आदर्श वे॥
विष्णुकुमार मुनि वात्सल्य वश रक्षा करी।
ध्याऊँ मुनिवर चरण, करो रक्षा मेरी॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ज्ञानानंद निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं।
मिटे मोह अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं॥
श्री अकंपनादि मुनि राज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सब कर्म समाज, पायी शिवरानी॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानंद चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै।
प्रभु चरनन देऊं चढ़ाय, दुख-अज्ञान हरै॥
श्री अकंपनादि मुनिराज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सब कर्म समाज, पायी शिवरानी॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चन्दनं।

तन्दुल ज्ञानानंद सार, अक्षय पदकारी।
मिटै सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी॥ श्री अकंपनादि॰ ॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञानानंद सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं प्रभु महा गुणवान, अनुपम सुखकारी॥
श्री अकंपनादि मुनिराज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सब कर्म समाज, पायी शिवरानी॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

नेवज ज्ञानानंद रूप, प्रभु ढिग भेट धरूं।
मिटै क्षुधा विभाव स्वरूप, सिद्ध पद प्राप्त करूं॥
श्री अकंपनादि मुनिराज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सर्व कर्म समाज, पायी शिव रानी॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपक ज्ञानानंद सार, धारौं प्रभु आगे।
मिटै मोह-अज्ञान-विकार, ज्ञान रवि जागे।।
श्री अकंपनादि मुनि राज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सब कर्म समाज, पायी शिवरानी।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारूं।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्ध पद को धारूं।।
श्री अकंपनादि मुनिराज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सब कर्म समाज पायी शिवरानी।। ७ ।।

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ज्ञानानंद फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में।
मैं पाऊँ सिद्ध पद इष्ट, प्रभु के चरणन में।। श्री अकंपनादि० ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविन्द को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घ करूं।
करूं आत्म विलास सुठाठ, भव तर मोक्ष वरूं।।
श्री अकंपनादि मुनिराज, सात शतक ज्ञानी।
जीता सब कर्म समाज, पायी शिवरानी।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

अकंपनादि मुनिराज वे, अनन्त वीर्य की खान ।
शुद्ध चिदानन्द लीन रह, उपसर्ग जीता महान ॥

जय जय जय जय मुनिराज शूर, ज्ञायक बल से भरपूर पूर ।
मैं शुद्ध चिदानन्द आत्म देव, निःशंक श्रद्धा वर्तें स्वयमेव ॥ १ ॥

नो कर्म-द्रव्य औंर भाव कर्म, नित्य मुझ से भिन्न सभी ये कर्म ।
अस्पृष्ट-अबद्ध मैं ज्ञानरूप, उपसर्ग सभी पुद्गल स्वरूप ॥ २ ॥

मैं अव्याबाध आनन्द रूप, यों ज्ञान लखै निज-पर स्वरूप ।
यों सम्यक्दर्शन-ज्ञानयुक्त, चारित्र धरैं मुनि राग मुक्त ॥ ३ ॥

चारित्र धर्म यह निज स्वभाव, वे धरैं सहज एक साम्य भाव ।
सो मोह-क्षोभ विहीन भाव, सो वीतराग चारित्र भाव ॥ ४ ॥

निर्विकल्प चिदानन्द बहै धार, बहु कर्म निर्जरा होय सार ।
शुद्धोपयोग क्रीड़ा महान, साक्षात् मोक्ष कारण ये जान ॥ ५ ॥

जब शुभोपयोग तब भेद ज्ञान, लखै आस्रव हेय, ज्ञायक महान ।
पालैं व्यवहार चरित अनूप, व्रत समिति-गुप्तिमय भेद रूप ॥ ६ ॥

धरैं भव-तन-भोग विराग अथाह, वर्तैं निज-पर कल्याण चाह ।
अन्तर्वाह्य तप धरैं सार, सम सुख-दुख चिद् आनन्द अपार ॥ ७ ॥

जीवन-मरण और शत्रु-मित्र, सबमें वर्तैं समता पवित्र ।
क्षणमें साधैं शुद्धात्म योग, करैं निर्विकल्प आनन्द भोग ॥ ८ ॥

मुनिराज धैर्य अद्‌भुत अपार, वे क्षमा-ज्ञान के महा भंडार ।
मैं ध्याऊँ मुनिवर बार-बार, प्रभु करो मुझे भव-सिन्धु पार ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय मुनिराजा, धर्म जिहाजा, ज्ञायक बल उपसर्ग जये।
मैं प्रभु गुण गाऊँ, शिव पद पाऊं, भव नहीं धारूं नये नये ।।

ॐ ह्रीं श्री घोर उपसर्ग विजेता अकंपनादि सात सौ मुनिवर प्रत्येक प्रत्येक मुनिवर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानन्द महार्घं ।

ध्याय अकम्पन चेतन, अकम्पन मुनि भये।
जीत घोर उपसर्ग, चिदानन्द रत रहे।।
मोह, राग और द्वेष, आत्म उपसर्ग अति।
आप प्रसाद से जीत, ये शुद्ध हो परिणति ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री विष्णुकुमार मुनि पूजा

विष्णुकुमार महामुनि, विक्रिया ऋद्धिधर।
सात शतक महामुनि, बचाये वात्सल्य धर॥
सम्यक् दर्शन अंग, ये वात्सल्य गुण महा।
प्रभु वात्सल्यमूर्ति, बसो मो उर सदा॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ज्ञानानन्द निर्मल नीर, चिद्रुचि झारी भरूं।
मिटै मोह-अज्ञान की पीर, यातैं धार करूं॥
श्री विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी।
करी सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारी॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

ज्ञानानन्द चन्दन लाय, शीतल सौख्य करै।
मुनि चरणन देऊं चढ़ाय, दुख अज्ञान हरै॥ श्री विष्णुकुमार० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षत ज्ञानानन्द सार, अक्षय पदकारी।
मिटै सर्व विभाव विकार, पूजा सुखकारी॥
श्री विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी।
करी सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारी॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णकुमार मुनिवर के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञानानन्द सुमन महान, काम व्यथाहारी।
पूजूं मुनि महा गुणवान, अनुपम सुखकारी॥
श्री विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी।
करी सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारी॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

नेवज ज्ञानानन्द रूप, तुम ढिग भेंट धरूं।
मिटै क्षुधा विभाव स्वरुप, सिद्धपद प्राप्त करूं॥
श्री विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी।
करी सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारी॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानन्द नैवेद्यं।

दीपक ज्ञानानन्द सार, धारों तुम आगे।
मिटै मोह-अज्ञान अन्धकार, ज्ञान-रवि जागे॥
श्री विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी।
करी सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारी॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिद्ध्यान हुताशन मांहि, कर्म सभी डारू ।
मेरे कर्म कलंक मिट जांहि, सिद्धपद को धारूं ॥
श्री विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी ।
करी सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारी ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वसनार्थं ज्ञानानंद धूपं ।

ज्ञानानन्द फल अति मिष्ट, अनुपम त्रिभुवन में ।
मैं पाऊं सिद्धपद इष्ट, मुनि के चरणन में ॥
श्रो विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारो ।
करो सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारो ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं ।

समकित आदि गुण आठ, इनको अर्घ करूं ।
करूं आतम विलास सुठाठ, भवतर मोक्ष वरूं ॥
श्रो विष्णुकुमार मुनिराज, वत्सलताधारी ।
करो सात शतक मुनिराज-रक्षा सुखकारो ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री परम वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

बछड़ा पर गऊ प्रीति ज्यों, त्यों साधर्मी प्रेम।
कहा वात्सल्य गुण महा, सम्यग्दृष्टि का नेम ॥ १ ॥

विष्णुकुमार महामुनि, चिदानन्द रस लीन।
प्रगटी विक्रिया ऋद्धि पर, भान न आतम लीन ॥ २ ॥

अकम्पनादि मुनिराज पर, हुआ उपसर्ग अपार।
मुनि रक्षा के निमित्त तब, धरा वामन अवतार ॥ ३ ॥

हस्तिनापुर में सप्तशत मुनि को घेर बलिराज।
अग्नि लगायी चार दिश, यज्ञ-हेतु अघ काज ॥ ४ ॥

वामन वेश में विष्णु मुनि, हस्तिनापुर के तीर।
यज्ञ दान में तीन डग, मांगी भूमि सुधीर ॥ ५ ॥

कही तथास्तु नृप बलि, दो डग में जग सर्व।
नापा विक्रिया ऋद्धि से, मिटा बलि का गर्व ॥ ६ ॥

दीन होय मस्तक झुका, बोला बलि हे नाथ।
तृतीय डग मुझ पर धरो, झुका हुआ मम माथ ॥ ७ ॥

सह न सका जब भार वह, रोया अति अकुलाय।
क्षमा क्षमा मुझ पर करो, मैं बहु पाप कराय ॥ ८ ॥

दयादृष्टि मुनिवर करी, हुई गगन से वृष्टि।
मुनि-रक्षा से यों हुई, घर घर आनन्द-सृष्टि ॥ ९ ॥

विष्णु मुनिदीक्षा धरी, हुए आत्म रस लीन।
रक्षा बन्धन पर्व यों, प्रचलित हुआ प्रवीण ॥ १० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह-राग और द्वेष ये, आत्म उपसर्ग हैं घोर।
रक्षक रत्नत्रय महा, चिन्मय आत्म विभोर ।। ११ ।।

जय जय मुनिराजा, धर्म जिहाजा, वात्सल्य गुण के धारी।
मैं प्रभु पद ध्याऊं, शिवपद पाऊं, वात्सल्य गुण सुखकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यमूर्ति विष्णुकुमार मुनिवर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानन्द महार्घं।

वात्सल्य गुणखान, विष्णुकुमार जी।
करी मुनि-रक्षा महान, महा सुखकार जी ।।
मोह-राग और द्वेष, आत्म उपसर्ग अति।
इनसे हो मेरी रक्षा, शुद्ध हो परिणति ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री अकृत्रिम जिनचैत्यालय पूजा

ऊर्ध्व लोक के लाख चौरासी, सहस सत्तानवे और तेईस।
साढ़े चार शतक तथा आठ, मध्य लोक के कहे मुनीश ॥
अधो लोक के सात कोटि और बहत्तर लाख जिनालय जान।
असंख्य-असंख्य व्यंतर-ज्योतिष के चैत्यालय अकृत्रिम महान ॥ १ ॥
एक-एक जिन चैत्यालय में, एक सौ आठ अकृत्रिम जिनबिंब।
धनुष पांचसौ तुंग रत्नमय, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब ॥
त्रिभुवन के सब जिनबिम्बों का, भक्ति भाव से करूं आह्वान।
जिनपूजन से जिनसम होकर, करूँ आत्म कल्याण महान ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ले ज्ञानानन्द निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुण गंभीर।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन ज्ञानानन्द बनाय, पूजूं श्री जिनवर के पांय।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्‌बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद **चंदनं** ।

अक्षत ज्ञानानन्द अनूप, पूजूं जिनवर तिहुं जग भूप।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्‌बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद **अक्षतं** ।

ज्ञानानन्द पुष्प ले सार, पूजूं जिनवर जग आधार।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्‌बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **पुष्पं** ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द सरस पकवान, पूजू श्री जिनवर गुणखान।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुखकार महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

ज्ञानानन्द दीप तमहार, पूजूं श्री जिन केवल धार।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञानानन्द धूप शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परमसुखकार॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द सरस फल सार, पूजूं जिन वांछित दातार।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञानानन्द अष्ट गुणकार, पूजूं श्री जिन मोक्ष दातार।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
त्रिभुवन के अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुखकार, महासुखकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

तीन लोक में राजते, अकृत्रिम श्री जिनबिम्ब।
भव्यों के अति पूज्य हैं, दर्शावें चिद्बिम्ब॥ १॥

लाख बत्तीस सौधर्म के, ईशान अट्ठाईस लाख।
सनत के बारह लाख हैं, माहेन्द्र के आठ लाख॥ २॥

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर चार लक्ष, आगे पचास हजार।
चालीस शुक्र-महाशुक्र, आगे छह हजार॥ ३॥

आनत-प्राणत, आरण-अच्युत में शतक सात।
नव ग्रैवेयक में कहे, तीनसौ नौ विख्यात॥ ४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नौ नव अनुदिशों में, पंच अनुत्तर पांच।
लाख चौरासी सत्तानवे हजार तेईस जिन भाख ॥ ५ ॥

ढाई द्वीप-पंचमेरु के, अस्सी जिनालय जान।
अस्सी वक्षार गिरि के, गजदंत बीस महान ॥ ६ ॥

तीस कुलाचल पर कहे, सौ-सत्तर वैतार।
कुरु भूमि में दस कहै, इक्ष्वाकार गिरि चार ॥ ७ ॥

नंदीश्वर बावन कहे, रुचिकर चार महान।
चार कुंडलवर द्वीप में, मानुषोत्तर चार जान ॥ ८ ॥

विघ्नहरण मंगलकरण, मध्य लोक के मांहि।
चार सौ अट्ठावन सभी, जिनभवन जिनेन्द्र कहांहि ॥ ९ ॥

असुरों के अधोलोक में, जिनालय चौंसठ लाख।
नागकुमारों के कहे, सर्व चौरासी लाख ॥ १० ॥

हेमकुमारों के कहे, जिनालय बहत्तर लाख।
बातकुमारों के लखो, सर्व छ्यानवे लाख ॥ ११ ॥

भवनवासी शेष छह, प्रत्येक छिहत्तर लाख।
अधो लोक के सर्व यों, सात कोटि बहत्तर लाख ॥ १२ ॥

आठ कोटि छप्पन लक्ष, सत्तानवे हजार।
तथा इक्यासी त्रिजग के, अकृत्रिम जिनालय सार ॥ १३ ॥

संख्यात पूर्वोक्त यों, और असंख्य-असंख्य।
व्यंतर ज्योतिषियों के हैं, भव्यों के सब वंद्य ॥ १४ ॥

एक एक मंदिर में हैं, एक सौ आठ जिनबिम्ब।
रत्नमयी अनुपम महा, दर्शावें चिद्बिंब ॥ १५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धनुष पांचसौ तुंग हैं, पद्मासन जिनबिंब।
अनादि अनंत अकृत्रिम हैं, दर्शावें चिद्बिंब ॥ १६ ॥

कोटि सूर्य से भी अधिक, रत्न ज्योति अभिराम।
अनुपम स्वानुभव निमित्त, महावैराग्य परिणाम ॥ १७ ॥

जिन प्रतिमा जिन सारखी, यामें संशय नांहि।
वचन बिना ही मुमुक्षु को, निन्मूरत दर्शांहि ॥ १८ ॥

जय जय त्रिभुवन जिन, जिनदर्शन से, होती आत्मसिद्धि सुखकार।
मैं पूजूं ध्याऊं, शिव सुख पाऊं, होऊं वेग भवार्णव पार ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिभुवन के सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थ ज्ञानानंद महार्घं।

सर्व अकृत्रिम जिनधाम, यथाशक्ति पूजें प्रत्यक्ष।
हम तो अल्प बलधाम, पूजें परोक्ष अति चाव सों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पंचमेरु जिनचैत्यालय पूजा

जहां तीर्थंकर न्हवन, वे मेरु तीर्थ हैं।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय, महा पवित्र हैं ॥
सुर, नर, चारण, पूजें अति ही चाव सों।
जिनदर्शन से निज दर्शन करें भाव सों ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैयात्लयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ले ज्ञानानन्द निर्मल नीर, पूजों जिनवर गुण गंभीर।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिम्ब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन ज्ञानानन्द बनाय, पूजों श्री जिनवर के पांय।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

अक्षत ज्ञानानन्द अनूप, पूजूं जिनवर तिहुं जग भूप।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिम्ब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानन्द अक्षतं।

ज्ञानानन्द पुष्प ले सार, पूजूं जिनवर जग आधार।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुखहोय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानन्द पुष्पं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द सरस पकवान, पूजूं श्री जिनवर गुणखान।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिम्ब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानन्द नैवेद्यं।

ज्ञानानन्द दीप तमहार, पूजूं श्री जिन केवल धार।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अंधकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञानानन्द धूप शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द सरस फलसार, पूजूं जिन वांछित दातार।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञानानन्द अष्ट गुणकार, पूजूं श्री जिन मोक्ष दातार।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय॥
पंचमेरु अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महासुख होय, महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

ढाई द्वीप में पांच हैं, मेरु महागिरि राज।
तीर्थंकरों के न्हवन से, हुए जो तीरथ राज॥ १ ॥
जम्बूद्वीप में एक है, धातुकी खंड में दोय।
पुष्करार्ध में मेरु दो, सब मिल पांच यों होय॥ २ ॥
प्रथम सुदर्शन मेरु है, विजय-अचल दो जान।
मंदर-विद्युन्माली हैं, गिरिराजों के नाम॥ ३ ।
एक एक के चार वन, भद्रशाल, नन्दनवन और।
सुमनस तथा पांडुक कहे, सब जग के शिरमौर॥ ४ ॥
इनमें से प्रत्येक के जिन चैत्यालय चार।
अकृत्रिम चैत्यालय सभी, यों मिल अस्सी सार॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक एक मन्दिर में हैं, एक सौ आठ जिनबिंब।
रत्नमयी अनुपम महा, दर्शावें चिद्बिंब ॥ ६ ॥

धनुष पांचसौ तुंग हैं, पद्मासन जिनबिंब।
अनादि अनन्त अकृत्रिम हैं, दर्शावें चिद्बिंब ॥ ७ ॥

कोटि सूर्य से भी अधिक, रत्न ज्योति अभिराम।
अनुपम स्वानुभव निमित्त, महा वैराग्य परिणाम ॥ ८ ॥

सुर, नर, चारण ऋद्धिधर, वंदें पांचों मेरु।
जिनदर्शन से स्वातम लख, हों आनन्द विभोर ॥ ९ ॥

करें न्हवन सौधर्म इन्द्र, अन्य इन्द्र सहयोग।
इन्द्राणी मंगल दरब धारें महामनोज्ञ ॥ १० ॥
नृत्य करें बहुअप्सरा, दर्शक देवी-देव।
सुरगुरु भी नहीं कह सकें, भक्ति करें जो देव ॥ ११ ॥
भक्ति वचनातीत तो, चैत्यालय-जिनबिंब।
महिमा कैसे कह सकें, हम जैसे मतिमन्द ॥ १२ ॥
जिन प्रतिमा जिन सारखी, यामें संशय नांहि।
वचन बिना ही मुमुक्षु को, चिन्मूरत दर्शांहि ॥ १३ ॥
जय पंचमेरु जिन, जिन दर्शन से, होती आत्मसिद्धि सुखकार।
मैं पूजूं ध्याऊं, शिव सुख पाऊं, होऊं वेग भवार्णव पार ॥
ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु संबंधी सर्व अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।
पंचमेरु जिनधाम, सुर-नर-चारण पूजते।
हम तो अल्प बलधाम, पूजें परोक्ष अति चाव सों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नंदीश्वर जिनचैत्यालय पूजा

अनुपम भक्ति पर्व, अठाईं पर्व है।
नंदीश्वर सुर जांहि, लिये वसु द्रव्य हैं।।
अकृत्रिम जिनबिम्ब पूज, महा हर्षाय हैं।
जिनदर्शन से अकृत्रिम चिद्बिंब पाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ले ज्ञानानन्द निर्मल नीर, पूजूं जिनवर गुण गंभीर।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार।।
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार।। १।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दन ज्ञानानन्द वनाय, पूजूं श्री जिनवर के पांय।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद **चंदनं**।

अक्षत ज्ञानानन्द अनूप, पूजूं जिनवर तिहुं जग भूप।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद **अक्षतं**।

ज्ञानानन्द पुष्प ले सार, पूजूं जिनवर जग आधार।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक भगवान के चरणारविंद को सर्वं कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद **पुष्पं**।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द सरस पकवान, पूजूं श्री जिनवर गुणखान।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

ज्ञानानन्द दीप तमहार, पूजूं श्री जिन केवल धार।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञानानन्द धूप शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को अष्टकर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानानन्द सरस फल सार, पूजू जिन वांछित दातार।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञानानन्द अष्ट गुणकार, पूजूं श्री जिन मोक्ष दातार।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥
नंदीश्वर अकृत्रिम जिनबिंब, दर्शावें अकृत्रिम चिद्बिंब।
महागुणकार, महागुणकार, जय जय नाथ परम सुखकार ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानन्द अर्घं।

जयमाल

मध्य लोक में आठवां द्वीप नंदीश्वर जान।
तेरह तेरह एक दिश, बावन मंदिर सब जान ॥ १ ॥

एक एक अंजनगिरि, दधिमुख चार चार।
आठ आठ रतिकरों पर, एक एक मंदिर सार ॥ २ ॥

धनुष पांचसौ तुंग हैं, पद्मासन जिनबिंब।
अनादि अनन्त अकृत्रिम हैं, दर्शावें चिद्बिंब ॥ ३ ॥

एक एक मंदिर में हैं, एक सौ आठ जिनबिंब।
रत्नमयी अनुपम महा, दर्शावें चिद्बिंब ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोटि सूर्य से भी अधिक, रत्न ज्योति अभिराम।
अनुपम स्वानुभव निमित्त, महा वराग्य परिणाम ॥ ५ ॥

कार्तिक-फागुन-आषाढ़ के, अन्त आठ दिन मांहि।
नंदीश्वर सुर जात हैं, शोभा कौन कहांहि ॥ ६ ॥

करें न्हवन सौधर्म इन्द्र, अन्य इन्द्र सहयोग।
इन्द्राणी मंगल दरव, धारें महा मनोज्ञ ॥ ७ ॥

नृत्य करें बहु अप्सरा, दर्शक देवी-देव।
सुरगुरु भी नहीं कह सकें, करें भक्ति जो देव ॥ ८ ॥

भक्ति वचनातीत तो, चैत्यालय जिनबिंब।
महिमा कैसे कह सकें, हम जैसे मतिमंद ॥ ९ ॥

जिन प्रतिमा जिन सारखो, यामें संशय नांहि।
यों जिन प्रतिमा पूजते, सर्व दुःख मिट जांहि ॥ १० ॥

जय नंदीश्वर जिन, जिन दर्शन से, होती आत्मसिद्धि सुखकार।
मैं पूजूं ध्याऊं, शिवसुख पाऊं, होऊं वेग भवार्णव पार ॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वर द्वीप के ५२ अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनप्रतिमा समूह प्रत्येक प्रत्येक जिनेन्द्र भगवान के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

नंदीश्वर जिनधाम, प्रत्यक्ष पूजें देव ही।
हम तो अल्प बलधाम, पूजें परोक्ष अति चाव सों ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री दशलक्षण धर्म पूजा

चारित्र धर्म महान है, दशलक्षण तसु भेद।
परम सिद्धि दाता कहे, स्वानुभूति निर्भेद ॥ १ ॥
उत्तम क्षमा और मार्दव, आर्जव, शौच महान।
सत्य, संयम, तपश्चरण, त्याग, आकिंचन जान ॥ २ ॥
ब्रह्मचर्य युत धर्म दश, साधैं मोक्ष का पंथ।
अधर्म नाश शिववास दें, धरैं साधु भगवंत ॥ ३ ॥
ये दशलक्षण धर्म मैं, पूजूं मन-वच-काय।
या प्रसाद से शीघ्र ही, होऊं सिद्ध शिवराय ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

विमल ज्ञान जलधार, निश्चय मेटै कर्म मल।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीतल ज्ञान सुखकार, मेटै भव-आताप सब।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

अक्षत ज्ञान निहार, अक्षय सिद्ध पद देय ही।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञान पुष्प सुखकार, मेटै काम विकार सब।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

ज्ञान नैवेद्य अतिसार, मेटै क्षुधा विभाव सब।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

दीप ज्ञानमय सार, स्व-पर प्रकाशै जगत में।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान धूप सुखकार, मेट कर्म जंजाल सब।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ज्ञान शुद्ध फल सार, मोक्ष महाफल देत है।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञान अष्ट गुणकार, करै अनर्घ पद आप ही।
मोह-अज्ञान निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

ज्ञायक भाव क्षमा भंडार, आत्म अरुचि सो क्रोध अपार।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम क्षमा धर्म है सोय ॥ १ ॥

आत्मा कोमल ज्ञान स्वरूप, कर्त्ता बनना मान विषरूप।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम मार्दव धर्म है सोय ॥ २ ॥

ज्ञाता द्रष्टा सहज स्वभाव, इसका लोप सो माया भाव।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम आर्जव धर्म है सोय ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

. CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म विभव तज शुभाशुभ प्रीति, सोही लोभ कहे जिन नीति।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम शौच धर्म है सोय॥ ४॥

सभी द्रव्य निज निज सत् धरें, असत्यवाद पर में पर कहैं।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम सत्य धर्म है सोय॥ ५॥

आत्म रमण है संयम भाव, पर में रमण असंयम भाव।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम संयम धर्म है सोय॥ ६॥

आत्म तृप्ति इच्छा नहीं कोय, जहां इच्छा वहां तप नहीं होय।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम तपश्चरण है सोय॥ ७॥

ज्ञायक भाव परत्याग स्वरूप, पर का ग्रहण अत्याग भव कूप।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम त्याग धर्म है सोय॥ ८॥

आत्मा निज़ गुण से है अनन्य, ममत्व भाव वश चाहे अन्य।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम आकिंचन है सोय॥ ९॥

आत्मा ब्रह्म महागुणखान, पर परिणति तो अब्रह्म ही जान।
जीत प्रचुर संवेदन होय, उत्तम ब्रह्मचर्य है सोय॥ १०॥

जय जय दशलक्षण चिदानन्द घन, आत्मस्वरूप महागुणखान।
मैं जजूं निरन्तर, यों अति सुखकर, पाऊं पद निर्वाण महान॥

ॐ ह्रीं श्री परमोत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षण धर्ममूर्तिस्वरूप भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थ ज्ञानानंद महार्घं।

दशलक्षण धर्म सार, तीन लोक तिहुं काल में।
शिवस्वरूप शिवकार, या प्रसाद शिवपद लहूँ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री रत्नत्रय पूजा

देव-शास्त्र-गुरु, द्रव्य षट् और पंचास्तिकाय।
सप्त तत्त्व, पदार्थ नव, श्रद्धा व्यवहार कहाय ।। १ ।।

शुद्ध चिदानन्द देव मैं, षट् द्रव्यों से भिन्न।
ये श्रद्धा निश्चय कही, मोक्ष हेतु अभिन्न ।। २ ।।

आगम ज्ञान से स्व-पर को, जानै सो व्यवहार।
लखै सहज शुद्धात्मा, निश्चय ज्ञान ये सार ।। ३ ।।

पंच महाव्रत, समिति और गुप्ति भेद व्यवहार।
निज शुद्धातम-रमण ये, निश्चय चारित्र सार ।। ४ ।।

भेदाभेद रतनत्रय, करै मंगलाचार।
साधै निज परमार्थ को वर्तें जय जयकार ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विमल ज्ञान जलधार, निश्चय मेटै कर्ममल।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

शीतल ज्ञान सुखकार, मेटै भव-आताप सब।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

अक्षत ज्ञान निहार, अक्षय सिद्ध पद देय ही।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञान पुष्प सुखकार, मेटै काम विकार सब।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्वकर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान नैवेद्य अतिसार, मेटै क्षुधा विभाव सब।

मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

दीप ज्ञानमय सार, स्व-पर प्रकाशै जगत में।

मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य, परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञान धूप सुखकार, मेटै कर्म जंजाल सब।

मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ज्ञान शुद्ध फल सार, मोक्ष महा फल देत है।

मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य, परमेश्वर के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञान अष्ट गुणकार, करै अनर्घ पद आप ही।

मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय जयमाल

ज्ञायक एक अभेद है, स्वयं रत्नत्रय रूप।
दर्शन-ज्ञान-चारित्रत्रय, भेद व्यवहार स्वरूप ॥

जय जय जय श्री आतमदेव, यहां बसें अनन्त चिद्गुण स्वयमेव।
टंकोत्कीर्ण विज्ञान रूप, निगोद-सिद्ध में एक चिद्रूप ॥ १ ॥

कारण परमात्मा गुण निधान, इसकी रुचि सो सम्यक्त्व मान।
अष्टांग सहित अविचल महान, ये मुक्ति महल का प्रथम सोपान ॥२॥

षट् द्रव्य और पंचास्तिकाय, सप्त तत्त्व पदार्थ नव बताय।
यथास्थित उनका जो श्रद्धान, जिन कथित व्यवहार सम्यक्त जान ॥३॥

स्वसंवेदन की बहै धार, ये निश्चय सम्यग्ज्ञान सार।
अरु यथास्थित सब अर्थज्ञान, सो व्यवहार सम्यग्ज्ञान जान ॥ ४ ॥

चारित्र धर्म यह निज स्वभाव, जानो ये ही एक साम्यभाव।
ये मोह-क्षोभ विहीन भाव, ये वीतराग चारित्र भाव ॥ ५ ॥

शुद्धोपयोग क्रीड़ा महान, साक्षात् मोक्ष कारण सो जान।
कभी शुभोपयोग तब भेद रूप, व्यवहार चरित्र वर्तै अनूप ॥ ६ ॥

धरें पांच महाव्रत, समिति पांच, पालें त्रिगुप्ति दिपै आतम सांच।
अन्तर्वाह्य तप धरें सार, सम सुख-दुख चिद् आनन्द अपार ॥ ७ ॥

क्षण में साधें शुद्धोपयोग, करें निर्विकल्प आनन्द भोग।
शुद्धात्म रूप में रहें लीन, करें क्षण क्षण में व्यवहार क्षीण ॥ ८ ॥

यों रत्नत्रय ही मोक्ष पंथ, सिद्ध हुए, हो रहे, होंगे सन्त।
ये रत्नत्रय परमार्थ रूप, मो उर प्रगटो बनूं शिव स्वरूप ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय रत्नत्रय, चिदानन्दमय, आत्मस्वरूप महागुण खान।
मैं जजूं निरन्तर, यों अतिसुखकर, पाऊं पद निर्वाण महान॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

रत्नत्रय चिद्रूप, मेटै कर्म कलंक सब।
करै वेग शिवभूप, नमूं नमूं मैं रत्नत्रय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सम्यक्दर्शन पूजा

शुद्ध चिदानन्द देव मैं, यों श्रद्धा अवगाढ़।
निश्चय सम्यक्दर्श ये, मोक्ष हेतु अवधार ॥ १ ॥

जिनप्रणीत षट् द्रव्य और तत्त्व, पदार्थ, अस्तिकाय।
ये श्रद्धा व्यवहार कही, निश्चय-हेतु कहाय ॥ २ ॥

निर्मल अष्टांग सहित, रहित दोष पच्चीस।
सम्यक्दर्शन मैं जजूं, बसूं लोक के शीस ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

विमल ज्ञान जलधार, निश्चय मेटै कर्ममल।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीतल ज्ञान सुखकार, मेटं भव आताप सब।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चदनं।

अक्षत ज्ञान निहार, अक्षय सिद्ध पद देय ही।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञान पुष्प सुखकार, मेटै काम विकार सब।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

ज्ञान नैवेद्य अतिसार, मेटै क्षुधा विभाव सब।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

दीप ज्ञानमय सार, स्व-पर प्रकाशै जगत में।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञान धूप सुखकार, मेटै कर्म जंजाल सब।
मिथ्या दर्श निवार, सम्यक् श्रद्धा मैं भजूं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान शुद्ध फल सार, मोक्ष महाफल देत है।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्षमहाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञान अष्ट गुणकार, करै अनर्घ पद आप ही।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

जय जय जय श्री आत्मदेव, यहां बसैं अनन्त चिद्गुण स्वयमेव।
टंकोत्कीर्ण विज्ञान रूप, निगोद-सिद्ध में एक चिद्रूप ॥ १ ॥

कारण परमात्मा गुण निधान, इसकी श्रद्धा सम्यक्त्व जान।
अष्टांग सहित अविचल महान, ये मुक्ति महल का प्रथम सोपान ॥२॥

गुण-पर्याय भेद यहां न होय, मैं ज्ञानमूर्ति निःशंक सोय।
शुद्धात्ममूर्ति संतृप्ति-खान, पर-निःकांक्षा सो गुण महान ॥ ३ ॥

चिन्मूरत मैं, नहीं ग्लानिभाव, ज्ञाता-दृष्टा ही निज स्वभाव।
सर्वज्ञ ज्ञान की महाखान, नहीं मूढ़ दृष्टि मैं चित् प्रधान ॥ ४ ॥

मैं धर्ममूर्ति, धर्मवृद्धि-खान, पर-दोष लखैं न सुदृष्टिवान।
स्थिर चिन्मूरत देख देख, करैं स्व-पर को स्थिर विशेष ॥ ५ ॥

निज ज्ञायक भाव में अचल प्रीति, यों सहजधर्मी वात्सल्यरीति।
ज्ञायक प्रभावना करैं महान, अन्तर-बाह्य सब गुण निधान ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इनसे विपरीत जो आठ दोष, मद आठ मूढ़ता तीन दोष।
छह धर्म-अनायतन कुल पच्चीस, नाशें सुदृष्टि बसें लोक शीस ॥ ७ ॥

जय सम्यग्दर्शन, आत्मप्रतीतिघन, शिवपथमूल, महागुणखान।
मैं जजूं निरन्तर, यों अतिसुखकर, पाऊं पद निर्वाण महान॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शनमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानन्द महार्घं।

सम्यग्दर्शन सार, तीन लोक तिहुं काल में।
शिवस्वरूप शिवकार, या प्रसाद शिवपद लहूं॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सम्यक्ज्ञान पूजा

शुद्ध चिदानन्द देव मैं, कर्मत्रय से भिन्न।
स्वसंवेदन ज्ञान ये, सम्यक्ज्ञान अभिन्न॥ १॥

आगम ज्ञान से स्व-पर को, जानै सो व्यवहार।
निश्चय का साधक कहा, स्वसंवेदन सार॥ २॥

अष्ट भेद हैं ज्ञान के, निर्मलता के हेतु।
सम्यग्ज्ञान जजूं सतत, यह भव सिन्धु-सेतु॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

विमल ज्ञान जल धार, निश्चय मेटै कर्म मल।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं।

शीतल ज्ञान सुखकार, मेटै भव आताप को।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चन्दनं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षत ज्ञान निहार, अक्षय सिद्ध पद देय ही ।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं ।

ज्ञान पुष्प सुखकार, मेटै काम विकार सब ।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्वं कर्मचेतनारूप कामवाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं ।

ज्ञान नैवेद्य अतिसार, मेटै क्षुधा विभाव सब ।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्वं कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं ।

दीप ज्ञानमय सार, स्व-पर प्रकाशै जगत में ।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानन्द दीपं ।

ज्ञान धूप सुखकार, मेटै कर्म जंजाल सब ।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अष्टकर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानन्द धूपं ।

ज्ञान शुद्ध फल सार, मोक्ष महा फल देत है ।
मिथ्या ज्ञान निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान अष्ट गुणकार, करै अनर्घ पद आप ही।
मिथ्या रोग निवार, सम्यक् ज्ञान मैं भजूं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

जयमाल

जय जय जय श्री आत्मदेव, टंकोत्कीर्ण ज्ञायक स्वयमेव।
चित् द्रव्य, चित् गुण, चित् पर्याय, धरै अनन्त शक्ति, न पर सहाय ॥१॥

जिनदेव धर्म नायक स्वरूप, प्रगटायो शिवमारग अनूप।
अरहंत द्रव्य-गुण और पर्याय, जो जाने उसका मोह जाय ॥ २ ॥

जिनदेव प्रणीत तत्त्वार्थ ज्ञान, सो सम्यग्ज्ञान महान जान।
षट् द्रव्य और पंचास्तिकाय, सप्त तत्त्व पदार्थ नव बताय ॥ ३ ॥

जिन आगम का यों कर अभ्यास, करै आत्म ज्ञान का बहु विकास।
सो सम्यग्ज्ञान गुण होंय आठ, जिनको धर ज्ञानी करैं सुठाठ ॥ ४ ॥

शुद्ध अक्षर, शुद्ध अर्थ जान, अक्षर-अर्थ संग दोनों जान।
जिनशास्त्र पठन वे करैं सुकाल, गुरु नाम छिपावैं न किसी काल ॥५॥

तपरीति गहैं बहुमान देय, बहु ज्ञान-विनय मुक्ति करेय।
यों आठों गुण युत शास्त्र-ज्ञान, करै स्वसंवेदन ज्ञान भान ॥ ६ ॥

द्रव्य-गुण और पर्याय एक, षट् द्रव्य भिन्न भिन्न एक एक।
मैं चिन्मूरत भिन्न अन्य द्रव्य, यों स्व-पर विवेक ये सदा पर्व ॥ ७ ॥

सम्यक्त्व सहित यों स्व-पर ज्ञान, आनन्द सहित वर्तै महान।
साधै शिवपंथ ये ज्ञान आप, प्रगटै चिर केवल रवि प्रताप ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय सम्यग्ज्ञान, महागुणखान, ये साधै केवल ज्ञान महान।
मैं जजूं निरन्तर, यों अति सुखकर, पाऊं पद निर्वाण महान ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञानमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्णं सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं ।

सम्यग्ज्ञान महान, तीन लोक तिहुं काल में।
शिवस्वरूप गुणखान, या प्रसाद शिवपद लहूं ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सम्यक्चारित्र पूजा

सम्यक्दर्शन-ज्ञान युत, शुद्ध चिदानन्द लीन।
सम्यक्चारित्र धर्म ये, समरस भाव प्रवीण ॥ १ ॥

मोह-क्षोभ विहीन ये, परम साम्य शिवरूप।
मोक्ष-मार्ग साक्षात् ये, अनुपम आत्म स्वरूप ॥ २ ॥

पंच महाव्रत, समिति और गुप्ति भेद व्यवहार।
सहकारी कारण कहे, तेरह विधि दुखहार ॥ ३ ॥

सम्यक् चारित्र मैं जजूं, मो उर करो प्रवेश।
आत्मसिद्धि, शिवपद वरूं, मिटें संसरण क्लेश ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

विमल ज्ञान जलधार, निश्चय मेटै कर्म मल।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानन्द जलं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीतल ज्ञान सुखकार, मेटै भव आताप सब।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चन्दनं।

अक्षत ज्ञान निहार, अक्षय सिद्ध पद देय ही।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

ज्ञान पुष्प सुखकार, मेटै काम विकार सब।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्म-चेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

ज्ञान नैवेद्य अतिसार, मेटै क्षुधा विभाव सब।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

दीप ज्ञानमय सार, स्व-पर प्रकाशै जगत में।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान धूप सुखकार, मेटै कर्म जंजाल सब।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

ज्ञान शुद्ध फल सार, मोक्ष महाफल देत है।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

ज्ञान अष्ट गुणकार, करै अनर्घ पद आप ही।
मिथ्या चरित्र निवार, सम्यक् चारित्र मैं भजूं ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

जयमाल

जय जय जय श्री आत्मदेव, चारित्रमूर्ति वर्तें स्वयमेव।
शुद्धात्म रमण चारित्र जान, शुद्धोपयोग क्रीड़ा महान ॥ १ ॥

चारित्र धर्म यह निज स्वभाव, जानो ये ही एक साम्य भाव।
ये मोह-क्षोभ विहीन भाव, ये वीतराग चारित्र भाव ॥ २ ॥

निर्विकल्प चिदानन्द बहै धार, बहु कर्म निर्जरा होय सार।
मुनि धारें ये चारित्र जान, साक्षात् मोक्ष-कारण महान ॥ ३ ॥

कभी शुभोपयोग तब भेद रूप, व्यवहार चरित्र वर्तें अनूप।
धरें पांच महाव्रत, समिति पांच, पालें त्रिगुप्ति दिपैं आत्म सांच ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरैं भव-तन भोग विराग अथाह, वर्तें निज-पर कल्याण चाह।
अन्तर्वाह्यतप धरैं सार, सम सुख दुख चिद् आनन्द अपार ॥ ५ ॥

क्षण में साधैं शुद्धात्म योग, करैं निर्विकल्प आनन्द भोग।
शुद्धात्म रूप में रहैं लीन, करैं क्षण-क्षण में व्यवहार क्षीण ॥ ६ ॥

सम्यक्दर्शन और ज्ञानयुक्त, चारित्र सहित मुनि होंय मुक्त।
सम्यक्चारित्र सो गुण महान, प्रगटो मो उर अति गुण निधान ॥ ७ ॥

जय सम्यक्चारित, शुद्ध आतमरति, आत्मस्वरूप महागुणखान।
मैं जजूं निरन्तर, यों अति सुखकर, पाऊं पद निर्वाण महान ॥

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरमणतास्वरूप सम्यक्चारित्रमूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

सम्यक्चारित्र सार, तीन लोक तिहुं काल में।
शिवस्वरूप शिवकार, या प्रसाद शिवपद लहूं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री क्षमावणी पूजा

मैं शुद्ध चिदानन्द देव, यों श्रद्धा न करी,
आतम ज्ञान विसार, मोह-सेवा करी।
राग-द्वेष वश होय, विराधना बहु करी,
मिटै सर्व सो दोष, रत्नत्रय विधि खरी ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ज्ञानानन्द सुहावनो, समता धार बहाय।
मिथ्या रोग निवारिये, सम्यक् रतन लहाय ।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर बचन लहाय । १ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमल भाव चंदन सरस, भव आताप मिटायं।
अनुभव अमृत पीजिए, सम्यक् रतन लहाय।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

सहज भाव अक्षत बना, अक्षय चिद् पद ध्याय।
जिनपद पूजों भाव सों, अक्षय सिद्ध पद पाय।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अक्षय सिद्ध पद लाभार्थ ज्ञानानंद अक्षतं।

समयसार शुभ सुमन ले, पूजों जिनवर पांय।
काम विभाव नशाइये, अनुभव अमृत पाय।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्वकर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

अकृत बोध सुहावनो, लेय सरस पकवान।
ज्ञान सुधा रस पीजिए, होय कर्म की हानि ।।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधा रोग विनाशनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्न दीप शुद्धातम रुचि, मोक्ष महल-सोपान ।
मोह-अज्ञान नशाइये, प्रगटै केवलज्ञान ।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य, परमेश्वर के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं ।

निजगुण अक्षय धूप ले, प्रगट करो निजधर्म ।
शुद्ध चिदानन्द अग्नि में भस्म होंय सब कर्म ।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं ।

परम भाव फलावली, मोक्ष महाफल-हेतु ।
अनुभव अमृत पीजिए, ये भवसिन्धु का सेतु ।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य, परमेश्वर के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं ।

शुद्ध चिदानन्द अर्घ ले, पूजूं जिनवर पांय ।
सर्व विभाव नशाइयें, पूरण सिद्धपद पाय ।
क्षमा गहो उर जीवड़ा, जिनवर वचन लहाय ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

रत्नत्रय उरधार, निश्चय मारग मोक्ष का।
भेदाभेद विचार, त्यागो भव जंजाल सब ॥ १ ॥

जय जय जय श्री आत्मदेव, यहां बस अनन्त चिद्‌गुण स्वयमेव।
टंकोत्कीर्ण विज्ञानरूप, निगोद-सिद्ध में एक चिद्रूप ॥ १ ॥

कारण परमात्मा गुण निधान, इसकी श्रद्धा सम्यक्त्व मान।
अष्टांग सहित अविचल महान, ये मुक्ति महल का प्रथम सोपान ॥२॥

गुण-पर्याय भेद जहां न होय, मैं ज्ञानमूर्ति निःशंक सोय।
शुद्धात्ममूर्ति संतृप्ति-खान, पर-निःकांक्षा सो गुण महान ॥ ३ ॥

चिन्मूरत मैं, नहीं ग्लानि भाव, ज्ञाता दृष्टा ही निज स्वभाव।
सर्वज्ञ ज्ञान की महा खान, नहीं मूढ़दृष्टि मैं चित् प्रधान ॥ ४ ॥

में धर्ममूर्ति धर्मवृद्धि-खान, पर-दोष लखें न सुदृष्टिवान।
स्थिर चिन्मूरत देख देख, करें स्व-पर को स्थिर विशेष ॥ ५ ॥

निज ज्ञायक भाव में अचल प्रीति, यों सहज धर्मी-वात्सल्य रीति।
ज्ञायक प्रभावना करें महान, अन्तर-बाहर सब विधि गुणवान ॥ ६ ॥

इनसे विपरीत जो आठ दोष, मद आठ, मूढ़ता तीन दोष।
छह धर्म-अनायतन कुल पच्चीस, नाशै सुदृष्टि बसें लोक शीस ॥ ७ ॥

जय जय जय जय श्री आत्मदेव, टंकोत्कीर्ण ज्ञायक स्वयमेव।
चित् द्रव्य, चित् गुण, चित् पर्याय, धरै शक्ति अनन्त, न पर सहाय ॥८॥

जिनदेव धर्मनायक स्वरूप, प्रगटायो शिवमारग अनूप।
अरहंत द्रव्य-गुण और पर्याय, जो जानै उसका मोह जाय ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनदेव प्रणीत तत्त्वार्थ ज्ञान, सो सम्यग्ज्ञान महान जान।
षट् द्रव्य और पंचास्तिकाय, सप्त तत्त्व पदार्थ नव बनाय ॥ १० ॥

जिन आगम का यों कर अभ्यास, करै आत्म ज्ञान का बहु विकास।
सो सम्यग्ज्ञान गुण होंय आठ, जिनको धर ज्ञानी करैं सुठाठ ॥ ११ ॥

शुद्ध अक्षर, शुद्ध अर्थ जान, अक्षर-अर्थ संग दोनों जान।
जिनशास्त्र पठन वे करैं सुकाल, गुरु नाम छिपावैं न किसी काल ॥१२॥

तप-रीति गहैं बहु मानदेय, बहु ज्ञान-विनय मुक्ति करेय।
यों आठों गुण युत शास्त्र-ज्ञान, करै स्वसंवेदन ज्ञान भान ॥ १३ ॥

द्रव्य-गुण और पर्याय एक, षट् द्रव्य भिन्न भिन्न एक एक।
मैं चिन्मूरत भिन्न अन्य द्रव्य, यों स्व-पर विवेक है सदा पर्व ॥ १४ ॥

सम्यक्त्व सहित यों स्व-पर ज्ञान, आनन्द सहित वर्तै महान।
साधै शिवपंथ सो ज्ञान आप, प्रगटै चिर केवल रवि प्रताप ॥ १५ ॥

जय जय जय जय श्री आत्मदेव, चारित्र मूर्ति वर्तै स्वयमेव।
शुद्धात्म रमण चारित्र जान, शुद्धोपयोग क्रीड़ा महान ॥ १६ ॥

चारित्र धर्म यह निज स्वभाव, जानो ये ही एक साम्यभाव।
ये मोह-क्षोभ विहीन भाव, ये बीतराग चारित्र भाव ॥ १७ ॥

निर्विकल्प चिदानन्द बहै धार, बहु कर्म निर्जरा होय सार।
मुनि धारैं सो चारित्र जान, साक्षात् मोक्ष-कारण महान ॥ १८ ॥

कभी शुभोपयोग तब भेदरूप, व्यवहार चरित वर्तै अनूप।
धरें पांच महाव्रत, समिति पांच, पालैं त्रिगुप्ति दिपै आतमसांच ॥ १९ ॥

धरैं भव-तन-भोग विराग अथाह, वर्तै निज-पर कल्याण चाह।
अन्तर्वाह्य तप धरैं सार, सम सुख दुख चिद् आनन्द अपार ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षण में साधैं शुद्धात्म योग, करैं निर्विकल्प आनन्द भोग !
शुद्धात्म रूप में रहैं लीन, करैं क्षण-क्षण में व्यवहार क्षीण ।। २१ ।।

सम्यग्दर्शन और ज्ञान युक्त, चारित्र सहित मुनि होंय युक्त ।
सम्यक् चारित्र सो गुण महान, प्रगटो मो उर अति गुण निधान ।। २२।।

मैं रत्नत्रय बिन ही अनादि, स्व-पर को हिंसा करो बादि* ।
सो घोर पाप अब क्षमा होहु, विनवूँ मैं मुझको क्षमा देहु ।। २३ ।।

जय जय रत्नत्रय, चिदानन्दमय, आत्मस्वरूप महागुण खान ।
मैं जजूं निरन्तर, यों अति सुखकर, पाऊं पद निर्वाण महान ।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मरुचिस्वरूप सम्यग्दर्शन, शुद्धात्मज्ञानमयी सम्यग्ज्ञान, शुद्धात्मरमणता स्वरूप सम्यक्चारित्र रत्नत्रय धर्ममूर्ति भगवान चैतन्य परमेश्वर के चरणारविन्द को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं ।

यह क्षमावणी पर्व महागुण खान है ।
मिटैं सहज सब दोष प्रगट भगवान है ।।
लख निज सम सब जीव, साम्य धारूं सदा ।
बसूं स्वदेश सदीव, भ्रमूं नहीं भव कदा ।।

---

* व्यर्थं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पंच बालयति पूजा

श्री वासुपूज्य जिन, मल्लिनाथ प्रभु, नेमिनाथ जो, पारसनाथ ।
वर्धमान अन्तिम तीर्थेश्वर, पंच बालयति शिवश्री नाथ ।।
ज्ञानदेव के प्रबल शौर्य से, कामदेव किया नष्ट समूल ।
भक्ति भाव से करूं आह्वानन, हरो हमारे सब अघशूल ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ये मोह और अज्ञान, कर्ममल दुखकारी ।
प्रभु शुद्ध चिदानन्द खान, अनुपम सुखकारी ।।
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु ।
परमात्मा जजूं सप्रेम, प्रगटें आत्म विभु ।।
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में ।
अब आयो प्रभु पद पास, मैल हरो क्षण में ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान मल विनाशनार्थं ज्ञानानंद जलं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु वचन हरैं भवताप, भव्यों को प्यारे।
मिथ्या विभाव संताप, दुःख हरैं सारे॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमात्मा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आत्म विभु॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, ताप हरो क्षण में॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथजी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान ताप विनाशनार्थं ज्ञानानंद चंदनं।

अक्षत शुद्धातम आप, अक्षत ही परिणति।
प्रभु आप चरण प्रताप, अक्षत हो परिणति॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमात्मा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आत्म विभु॥ मैं भेद०॥ ३॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को अक्षय सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अक्षतं।

प्रभु शील शिरोमणि आप, सर्व विभाव हरे।
शुद्धातम तिष्ठै आप, हो रक्षक मेरे॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमात्मा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आत्म विभु॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, काम हरो क्षण में॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मचेतनारूप कामबाण विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद पुष्पं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु शुद्धातम संतृप्त, पर की चाह मिटी।
पर चाह क्षुधाग्नि अतृप्त, मेरी नांहि मिटी॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमातमा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आतम विभु॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, वहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, क्षुधा हरो क्षण में। ५॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथजी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी, प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को सर्व कर्मफलचेतनारूप क्षुधारोग विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद नैवेद्यं।

चेतन की ज्योति प्रकाश, प्रभु-तन मांहि लसै।
मिटे मोह-अज्ञान की राशि, ज्ञान रवि दरशै॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमातमा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आतम विभु॥ मैं भेद०॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथजी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को मोह-अज्ञान अन्धकार विनाशनार्थं ज्ञानानंद दीपं।

ज्ञानानन्द धूप सुवास, आतम विभोर करै।
प्रभु कर्म किये सब नाश, पूजा सौख्य करै॥
श्री वासुपूज्य मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमातमा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आतम विभु॥ मैं भेद०॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथजी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को अष्ट कर्म विध्वंसनार्थं ज्ञानानंद धूपं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु मोक्ष महा फल खान, सौख्य अनन्त धरो।
मेरे कर्म-फल विद्यमान, सो ही वेग हरो॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमात्मा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आतम विभु॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, मोक्ष करो क्षण में॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को स्वात्मोपलब्धिरूप मोक्ष महाफल लाभार्थं ज्ञानानंद फलं।

समकित आदि गुण धार, आप बसो निज में।
ये ही मैं अर्घ संवार, आयो चरनन में॥
श्री वासुपूज्य, मल्लि, नेम, पारस, वीर प्रभु।
परमात्मा जजूं सप्रेम, प्रगटैं आतम विभु॥
मैं भेद विज्ञान अभाव, बहुत रुल्यो जग में।
अब आयो प्रभु पद पास, पूर्ण करो क्षण में॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं अर्घं।

पंच कल्याणक

अन्तिम गर्भ महा सुखकार, भवसागर से उतरे पार।
अनन्त गुणातम आतम शुद्ध, तीन ज्ञान युत महा प्रबुद्ध॥ १॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव गर्भ कल्याणक प्राप्त पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्म हुआ जब अति ही क्षीण, तब धर्मेश्वर जन्मे प्रवीण।
जन्म शृंखला नाशक जन्म, त्रिभुवन सुखदायक प्रभु जन्म ।। २ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव जन्म कल्याणक प्राप्त पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्यजी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी, प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

भव-तन-भोग परम वैराग, शुद्धातम रस में चितपाग।
अन्तर-बाह्य धर्यौ तपसार, तपकल्याण महा हितकार।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव तप कल्याणक प्राप्त पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्यजी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी, प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानन्द अर्घं।

शुक्ल ध्यान कर कर्म विनाश, पायौ केवल ज्ञान प्रकाश।
कियो स्व-पर कल्याण महान, ज्ञान कल्याण महागुण खान ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव ज्ञान कल्याणक प्राप्त पंच बालयति समूह भगवान बासुपूज्यजी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

योग निरोध सब कर्म खपाय, स्वात्मोपलब्धि सिद्धपद पाय।
रहैं अनन्तानन्त सुकाल, करै मोक्ष कल्याण निहाल ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव मोक्ष कल्याणक प्राप्त पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद अर्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

जय जय जय जय श्री वासुपूज्य, प्रभु आप सभी भव्यों के पूज्य ।।१।।
अणुव्रत युत प्रभु का गृह निवास, ज्यों जल में कमल रहै उदास ।।२।।
आतम हित की एक मात्र चाह, रह्यो भव-तन-भोग वैराग अथाह ।।३।।
सिद्धश्री से प्रभु की परम प्रीति, यों गही बाल-ब्रह्मचर्य रीति ।। ४ ।।
नारी-ईर्ष्या जग प्रसिद्ध जान, रहे बाल ब्रह्मचारी महान ।। ५ ।।
जय जय जय जय श्री मल्लिनाथ, आजन्म रहे जग से उदास ।। ६ ।।
प्रभु ब्याह समय वैराग्य धार, निर्वाण वधू मन में विचार ।। ७ ।।
जड़ तन-रति को सुख कहैं मूढ़, ये आदि-मध्य-अन्त दुःखगूढ़ ।। ८ ।।
एक छत्र कामवश जगत सर्व, प्रभु आप हर्यो सब काम-गर्व ।। ९ ।।
निज चिदानन्द में लीन होय, परणो शिवकान्ता कर्म खोय ।। १० ।।
जय जय जय जय श्री नेमिनाथ, रजमति तज हुए शिव प्रियानाथ ।।११।।
पशुओं की सुन करके पुकार, करुणा सागर उमड़ो अपार ।। १२ ।।
द्वादश अनुप्रेक्षा भायीं देव, लौकांतिक देव आये स्वयमेव ।। १३ ।।
धन्य धन्य आप प्रभु कामजीत, तज लोकरीति गही मुक्ति रीति ।।१४।।
भव्यों के हो आदर्श आप, मिटै आप प्रसाद संसार ताप ।। १५ ।।
जय जय जय जय श्री पार्श्वनाथ, वैराग्य शिरोमणि जगतनाथ ।।१६।।
रति कहै काम से ये हैं कौन, कह 'ये जिनेन्द्र' रह्यो काम मौन ।।१७।।
रति कहै आप जगजीत देव, क्या ये भी तव वश करै सेव ।। १८ ।।
नहीं नहीं ये तो हैं मोहजीत, हम मोह के किंकर अनादि रीति ।।१९।।
इनकी प्रीति सिद्धश्री मांहि, यमवश यहां कुछ भी नहीं चलांहि ।।२०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय जय जय श्री महावीर, प्रभु ने जीते सब काम-तीर ॥ २१ ॥

पिता ब्याह का आग्रह किया विशेष, पर काम अलिप्त रहे प्रभु चिदेश ॥ २२ ॥

मल रहित रहै सो ही रीति शुद्ध, जग में प्रसिद्ध कहैं सब प्रबुद्ध ॥२३॥

त्यों कर विवाह काम लिप्त होय, फिर धरूं वैराग्य यों कभी न होय ॥ २४ ॥

जड़ देह-रति संसार खान, शुद्धातम-रति शिव सौख्य दान ॥ २५ ॥

यों यौवन में वैराग्य धार, लगी सुरति सतत शिवश्री मंझार ॥२६॥

निज आत्मा ब्रह्म, हो ब्रह्मलीन, वरी बालयति शिवश्री प्रवीण ॥२७॥

जय जय चिद्राजा, धर्म जिहाजा, बालयति तीर्थेश महान ।
मैं प्रभु गुण गाऊं, कर्म नशाऊं, पाऊं पद निर्वाण महान ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव पंच बालयति समूह भगवान वासुपूज्य जी, मल्लिनाथ जी, नेमिनाथ जी, पार्श्वनाथ जी, महावीर जी प्रत्येक प्रत्येक पंच बालयति भगवान के चरणारविंद को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं ।

शुद्ध चिदातम देव, शुद्ध परिणति बनी,
हुए परम कृतकृत्य, अनन्त आतमधनी,
द्रव्य दृष्टि मैं शुद्ध, ये परिणति मोह वश,
आप प्रसाद से पूर्ण, हो वर्तें आत्मवश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समुच्चय अर्घ

मैं देव श्री अरिहंत पूजूं, सिद्ध पूजूं भाव सों।
आचार्य श्री उपाध्याय पूजूं, साधु पूजूं चाव सों ॥

अरिहंत भाषित बैन पूजूं, द्वादशांग रचे गणी।
पूजूं दिगम्बर गुरु चरण, शिव हेतु सब आशा हनी ॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामयी पूजूँ सदा।
जज भावना षोड़श रतनत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ॥

त्रैलोक्य के क्रत्रिम-अक्रत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूं।
पंचमेरु-नन्दोश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूं ॥

कैलाश, श्री सम्मेद, श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा।
चंपापुरी, पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा ॥

चौबीस श्री जिनराज पूजूं, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली 'इक सहस' वसु जप, होंय पति शिव गेह के ॥

जल गंधाक्षत पुष्पचरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहौं, बहुविध भक्ति बढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाधिदेव भगवान सर्व अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, साधुजी; भगवती जिनवाणी, उत्तम क्षमादि दशधर्म, दर्शन विशुद्धि आदि षोड़श कारण भावना, सम्यक् रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, पंच मेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, नंदीश्वर सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, निर्वाण क्षेत्र श्री कैलाश गिरि, श्रीसम्मेद गिरि, श्री गिरनार गिरि, चम्पापुर, पावापुर आदि तीर्थ क्षेत्र, श्री वृषभादि चौबीस जिनेन्द्रदेव, श्री सीमंधर आदि बीस विद्यमान जिनेन्द्र देव, भगवान के १००८ नाम आदि सर्व पूज्य पदों को परिपूर्ण सिद्धपद लाभार्थं ज्ञानानंद महार्घं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपती चक्री करें।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें।।

धन, क्रिया, ज्ञान रहित न जानूं, रीति पूजन नाथ जी।
हम भक्तिवश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी।।

दु:खहरण मंगलकरण आशा भरण जिन पूजा सही।
यह चित्त में सरधान मेरे, शक्ति है स्वयमेव ही।।

तुम सारिखे दातार पाये, काज लघु जाचूं कहा।
मुझ आप सम कर लेहु स्वामी, यही इक वांछा महा।।

संसार भीषण विपिन में, वसु कर्म मिल आतापियो।
तिस दाह तें आकुलित चित में, शांति थल कहुं न लियो।।

तुम मिले शांति स्वरूप, शान्तिकरण समरथ जगपति।
वसु कर्म मेरे शान्त कर दो, शान्तिमय पंचम गति।।

जबलौं नहीं शिव लहूं, तबलौं देहु यह धन पावना।
सत्संग शुद्धाचरण श्रुत अभ्यास आतम भावना।।

तुम बिन अनंतानंत काल गयो रुलत जग जाल में।
अब शरण आयो नाथ युगकर जोड़ नावत भाल मैं।।

कर प्रमाण के मान तें गगन नपै किह भंत।
त्यों तुम गुण वर्णन करत कवि पावे नहीं अंत।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुमुक्षु की भावना

दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं ।
समाहिमरणं, जिनगुण सम्पत्ति होहु मज्झं ॥

अर्थ : मेरे दुःख का क्षय हो, कर्म का क्षय हो, बोधि (सम्यक् रत्नत्रय) का लाभ हो, सुगति में गमन हो, समाधिमरण हो, जिनेन्द्र देव की गुणरूप सम्पत्ति मुझे प्राप्त हो ।

क्षमापन

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊँ, इस परम पूजन ठाठ में ।
अज्ञान वश शास्त्रोक्त विधि तैं चूक कीनी पाठ में ॥

सो होहु पूर्ण समस्त विधिवत् प्रभु चरण की शरण तैं ।
वंदूं तुम्हैं कर जोड़ कर उद्धार जामन मरण तैं ॥

आह्वाननं, स्थापनं तथा सन्निधिकरण विधान जी ।
पूजन, क्षमापन यथाविधि जानूं नहीं गुणखान जी ॥

जो दोष लागो सो नशो सब प्रभु चरण की शरण तैं ।
बन्दूं तुम्हें कर जोड़कर उद्धार जामन मरण तैं ॥

प्रभु रहित आवागमन आह्वानन कियो निज भाव सों ।
विधि यथाक्रम निज शक्ति सम पूजन कियो अति चाव सों ॥

करहुँ क्षमापन भाव ही सों प्रभु चरण की शरण तैं ।
वंदूं तुम्हैं कर जोड़ कर उद्धार जामन मरण तैं ॥

तीन भुवन तिहुं काल में प्रभुसा देव न और ।
सुख कारण संकट हरण नमूं युगल कर जोर ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनगुण गांवां हर्षावां

जिनगुण गांवां हर्षावां, उत्सव मनावां आवां,
उत्सव मनावां आवां,
सभी गुणधारी, धारी, सभी गुणधारी ॥ टेक ॥

आत्मज्ञान में सहज ही शांती, छाज रही, छाज रही,
रत्नत्रय की मधुर बांसुरी, बाज रही, बाज रही,
सब मिल मंगल गाते, दर्शन कर जिन वैभव,
महापुण्यकारी, कारी, महापुण्यकारी ।
प्रभुपद ध्यावां, उल्लसावां, विनय विवेक बढ़ावां,
विनय विवेक बढ़ावां,
महासुखकारी, कारी, महासुखकारी ।

सबके सन्मुख शांतभाव, सु सोहना, सोहना,
सरल भाव मनोज्ञ बना, मन मोहना, मोहना,
स्वरस रस में रमते, समझ कर निज वैभव,
महाहितकारी, कारी, महाहितकारी ।
अरिहंत ध्यावां हर्षावां, पर का कर्तृत्व मिटावां,
ज्ञाता-दृष्टा अपनावां,
महारिद्धिधारी, धारी, महारिद्धिधारी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज के अंदर रहे शुद्धता, स्वयं जीयें, सुखम् जीयें,
अनुभव रसमय झरी गिरा, अमृत पियें अमृत पियें,
दृष्टि आतम रस भोगे, धर्म अहिंसा जग में,
महाशांतिकारी, कारी, महाशांतिकारी।

सिद्धपद ध्यावां उल्लसावां, विश्व को ज्ञेय बनावां,
चेतन को ध्येय बनावां,
महासिद्धिधारी, धारी, महासिद्धिधारी।

संक्षिप्त पद

प्रभु है स्वयं आत्मा, भक्त हैं श्रद्धा-ज्ञान।
समझ-समझ भक्ति करां, निश्चय सिद्ध समान॥ १॥

द्रव्यमात्र को अपने आपका, करने वाला रहने दो।
अपना ज्ञायक आप संभालो, पर का पर में रहने दो॥ २॥

विश्व स्वयं सब होय रहा है, ज्ञान स्वयं सब जोय रहा है।
मूर्ख निश दिन रोय रहा है, अमृत जीवन खोय रहा है॥ ३॥

वस्तु करती निज-निज धंधा,
उसका कर्त्ता बने सो अन्धा॥ ४॥

क्यों हीये जड़ भार, झोंक जीव को खाड़ में।
अपनी ओर निहार, झोंक भार को भाड़ में॥ ५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सिद्धचक्र पद

श्री सिद्धचक्र का ध्यान, आतम पहिचान, करो भव्य प्राणी,
यों मिलै मुक्ति सुखदानी ॥

श्री सिद्धप्रभु चिन्मूरत हैं, ज्ञाता-दृष्टा बिन मूरत हैं !
लख आतम सिद्ध समान, बनो दृढ़ ज्ञानी ॥ यों मिलै० ॥ १ ॥

निज चिदानन्द पद ध्याय ध्याय, सम्यक् रत्नत्रय पाय पाय ।
हुए प्रगट सिद्ध भगवान, महागुणखानी ॥ यों मिलै० ॥ २ ॥

क्षायिक श्रद्धा और ज्ञान अचल, दर्शन-बल-सौख्य अनन्त धवल ।
अवगाहन, सूक्ष्मत्व जान, अगुरुलघु ज्ञानी ॥ यों मिलै० ॥ ३ ॥

सिद्ध-संसारी व्यवहार भेद, निश्चय चिन्मूरत ध्रुव अभेद ।
कारण चिद्पिंड, कार्य सिद्ध कहैं ज्ञानी ॥ यों मिलै० ॥ ४ ॥

जिसने यों सिद्धचक्र-ध्यान किया, सो अल्प काल में सिद्ध हुआ ।
ये ही त्रिकाल शिवपथ है, कहै जिनवाणी ॥ यों मिलै० ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाधि भावना

दिन रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊं।
देहान्त के समय में, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ १ ॥

करके क्षमा सभी को, सबसे क्षमा कराऊं।
निश्चय क्षमा ग्रहण कर, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ २ ॥

त्यागूं सकल परिग्रह, मिथ्यात्व और कषाय।
समता का भाव धर कर, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ३ ॥

हो यदि विकल्प तो मैं, परमेष्ठी पांचों ध्याऊं।
फिर निर्विकल्प होकर, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ४ ॥

वैराग्य-ज्ञान की तब, अनुपम कला जगी हो।
जड़ देह, कर्म मुक्त, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ५ ॥

जीने को हो न इच्छा, मरने की हो न वांछा।
बस ज्ञाता-दृष्टा रहकर, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ६ ॥

कर दोष का आलोचन, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान।
निर्दोष होय सबविध, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ७ ॥

चैतन्य मेरा प्राण, चैतन्य मम समाधि।
चिद्लीन कर्म मुक्त, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ८ ॥
हो ज्ञानचेतना बस, चेतूं न कर्म, कर्मफल।
उपसर्ग केवलोवत्, निज आत्मा ही ध्याऊं ॥ ९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विज्ञप्ति

देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति से प्रेरित होकर अनेक परमागम ग्रन्थों की मूल गाथाओं/श्लोकों का उन्हीं छन्दों में सरल हिन्दी पद्यानुवाद हुआ है। इन अनुवादों को आत्मार्थी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्री की पुण्यस्मृति में श्री कुन्द-कहान परमार्थ प्रकाशन के विविध पुष्पों के रूप में प्रकाशित करना है :—

प्रकाशित

१. ज्ञानामृत कलश (श्री समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार कलश) — मूल्य ७.०० रु०

२. अध्यात्म पूजा संग्रह — मूल्य ५.०० रु०

अप्रकाशित

३. पंचाध्यायी भाग १-२ — (पांडुलिपि तैयार है)

४. आत्मतत्त्वत्रयी (श्री आत्मानुशासन, तत्त्वानुशासन, तत्त्वज्ञान तरंगिणी) — (,, ,, ,,)

५. कुंदकुंद दिव्यामृत भाग १ (श्री समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड़) — (संशोधन हो चुका है)

६. कुंदकुंद दिव्यामृत भाग २ (श्री मूलाचार, रयणसार, बारस अणुवेक्खा, दशभक्ति) — (,, ,, ,,)

७. पद्मनंदि पंचविंशतिका — (,, ,, ,,)

८. पूज्यपाद धर्मामृत (श्री समाधितंत्र, इष्टोपदेश, दशभक्ति) — (,, ,, ,,)

९. भगवती आराधना — (,, ,, ,,)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१०. परमात्म योगामृत (श्री परमात्म प्रकाश, योगसार द्वय) (संशोधन हो चुका है)

११. स्तोत्र संग्रह (वृहद् स्वयभू स्तोत्र, भक्तामर, कल्याणमंदिर आदि अनेक स्तोत्र) („ „ „)

१२. विविध धर्मामृत : द्वादश अनुप्रेक्षा (श्री कार्तिकेय स्वामी), श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय, लघु तत्त्व स्फोट (श्री अमृतचन्द्र आचार्य देव), आराधना सार (श्री देवसेन आचार्य देव), श्री रत्नकरंड श्रावकाचार, वृहद् द्रव्य संग्रह, श्री सूक्ति मुक्तावली, द्रव्य स्वभाव प्रकाशक नयचक्र (श्री माइल्ल धवल) („ „ „)

अन्य सामग्री

१. चिदानन्द पद संग्रह भाग १ (श्री समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार की संस्कृत टीकाओं पर आधारित लगभग २०० अध्यात्म पद) („ „ „)

२. चिदानन्द पद संग्रह भाग २ (अन्य परमागम ग्रन्थ, दशलक्षण, सोलहकारण आदि के लगभग १०० अध्यात्म पद) („ „ „)

३. श्री तत्त्वार्थसूत्र (आत्म प्रबोधिनी टीका) (पूर्ण हो चुकी है)

आप भी स्व-पर हितार्थ इनमें से एक या अधिक पुष्प चयन कर अपने/अपनी संस्था के नाम से प्रकाशित कर सकते हैं। यथासमय पांडुलिपि भेजी जा सकती है।

निःशुल्क पांडुलिपि के लिये पत्र-व्यवहार का पता ;—

अनन्त चैतन्य जैन,
८६४ (प्रथम मंजिल),
जोशी पथ, करोल बाग,
नई दिल्ली—११०००५

5343

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digi[redacted]eGangotri

* श्री वीतरागाय नमः *

* चौबीस तीर्थंकरों की पंच कल्याणक तिथियां (स्व० श्री वृन्दावनकृत पूजाओं से) *

	नाम तीर्थंकर	कार्तिक		मंगसिर		पौष		माघ		फाल्गुन		चैत्र		वैसाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		चिह्न
		कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	कृष्णा	शुक्ला	
१	श्री आदिनाथ जी							१४ मोक्ष		११ ज्ञान		९ जन्म तप						२ गर्भ								बैल
२	श्री अजितनाथ जी						४ ज्ञान		१० जन्म तप				५ मोक्ष			१५ गर्भ										हाथी
३	श्री सम्भवनाथ जी	४ ज्ञान	१५ जन्म		१५ तप						८ गर्भ		६ मोक्ष													घोड़ा
४	श्री अभिनन्दननाथ जी						१४ ज्ञान		१२ जन्म तप						६ गर्भ मोक्ष											बन्दर
५	श्री सुमतिनाथ जी												११ जन्म तप ज्ञान मोक्ष								२ गर्भ					चकवा
६	श्री पद्मप्रभु जी		१३ जन्म तप					६ गर्भ		४ मोक्ष			१५ ज्ञान													कमल
७	श्री सुपार्श्वनाथ जी									६ ज्ञान ७ मोक्ष							१२ जन्म तप						६ गर्भ			स्वास्तिक
८	श्री चन्द्रप्रभु जी					११ जन्म तप				७ ज्ञान	७ मोक्ष	५ गर्भ														चन्द्रमा
९	श्री पुष्पदंत जी		२ ज्ञान		१ जन्म तप					९ गर्भ															८ मोक्ष	मगर
१०	श्री शीतलनाथ जी					१४ ज्ञान		१२ जन्म तप				८ गर्भ													८ मोक्ष	कल्पवृक्ष
११	श्री श्रेयांसनाथ जी							१५ ज्ञान		११ जन्म तप						८ गर्भ					१५ मोक्ष					गैंडा
१२	श्री वासुपूज्य जी									१४ जन्म तप								६ गर्भ				२ ज्ञान	१४ मोक्ष			भैंसा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi